CIN-NO-UT4999RJ2020PTC0679.
UN NO-200022186

Title Code-RAJHIN27921

मरूधर विशेष

वर्षः 1 अंकः 15 | हिन्दी | प्रातः कालीन | जयपुर, शुक्रवार, 19 अगस्त, 2022 | पृष्ठ :4 | मूल्यः 2 रुपए

वर्ल्ड फोटोग्राफी-डे : बड़ी झील का नजारा

हर साल 19 अगस्त को पूरी दुनिया में वर्ल्ड फोटोग्राफी डे मनाया जाता है। दरअसल, यह दिन उन लोगों को समर्पित होता है, जिन्होंने कुछ खास पलों को तस्वीरों में कैद कर उन्हें हमेशा-हमेशा के लिए यादगार बना दिया। दुनियाभर के फोटोग्राफरों को प्रोत्साहित करने के लिए भी यह दिवस मनाया जाता है।

फोटो : शमीम खान

महाराष्ट्र के रायगढ़ में दो संदिग्ध नाव बरामद

एके-47 समेत कई हथियार बरामद, हाई अलर्ट जारी

रायगढ़ ■ एजेंसी

मुंबई से सटे रायगढ़ में दो संदिग्ध नाव बरामद की गई हैं। नावों के अंदर हथियार भी मिले हैं। बताया जा रहा है कि किसी मछुआरे ने मुंबई पुलिस को इसकी खबर दी, जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंच जांच में जुट गई। नाव में हथियार मिलने के बाद इलाके भर में हाई अलर्ट जारी कर दिया है। ये बोट यूके में रजिस्टर है। सूत्रों ने बताया कि यह बोट ओमान के पास डिस्ट्रेस में थी तभी इस बोट के लोगों को ओमान में रेस्क्यू किया गया था।

इसके बाद से ये बोट वहां पानी में ऐंकर की गई थ, जो बहते हुए रायगढ़ आ गई। पुलिस इस मामले की जांच कर रही है। ये बोट बहते हुए भारत में आ गई है। इसमें कुछ डिसमेंटल हथियार मिले हैं। शुरुआती जांच में टेरर एंगल नहीं दिख रहा है। इन नावों को लेकर मेरीटाइम नेपच्यून सिक्योरिटी कंपनी लंदन ऑफिस में फोन किया। वहां विक्टोरिया नाम की महिला ने फोन उठाया। उनसे रायगढ़ में मिले हथियार से भरे बॉक्स बारे में पूछने पर वे बोलीं कि वो अपने सीनियर्स से बात कर जानकारी लेकर फिर हमें जानकारी देंगी। आधे घंटे का समय मांगा है। जानकारी के लिए रायगढ़ में जो हथियार से भरा बॉक्स मिला है उस पर मेरीटाइम नेपच्यून सिक्योरिटी लिखा हुआ है। दूसरी बोट भरण खोल समुद्री तट पर मिली है।

उपमुख्यमंत्री ने कहा-ऑस्ट्रेलियाई नागरिक की है नाव

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फड़णवीस ने कहा कि एक नाव ऑस्ट्रेलियाई नागरिक की है। लेडीहान नाम की ये नाव ऑस्ट्रेलियाई महिला की है। उनके पति जेम्स हर्बर्ट नाव के कप्तान हैं। समुद्र में नाव का इंजन फट गया था। एक कोरियाई नाव ने लोगों को निकाला। ये नाव अब हरिहरेश्वर समुद्र तट पर पहुंच गई। नाव से तीन एके-47 राइफलें और बड़ी मात्रा में जिंदा कारतूस मिले हैं। आगामी त्योहारी सीजन को ध्यान में रखते हुए पुलिस और प्रशासन को तैयार रहने के निर्देश दिए गए हैं।

रायगढ़ के कलेक्टर ने लोगों से की ये अपील

वहीं रायगढ़ के कलेक्टर ने नागरिकों से किसी भी अफवाह पर विश्वास न करने का आग्रह किया है। उन्होंने लोगों से कहा है कि अगर आसपास के इलाके में कोई संदिग्ध गतिविधि पाई जाती है या उन्हें किसी पर शक होता है तो तुरंत पुलिस और जिला प्रशासन को इसकी सूचना दें। पूरे राज्य में हाई अलर्ट जारी है। स्थानीय विधायक जयंत पाटिल ने जानकरी दी है कि जो बोट मिली है समंदर में उसमें 3 एके-47 गन और 248 जिंदा कारतूस मिले हैं, ये जानकारी उन्हें एसपी ने दी है।

केंद्रीय एजेंसियों को सूचित किया

केंद्रीय एजेंसियों को सूचित कर दिया गया है। एटीएस भी इस पर काम कर रही है। जरूरत पड़ने पर अतिरिक्त बल भी तैनात किया जाएगा। किसी आतंकी एंगल की पुष्टि नहीं हुई है। हम किसी भी बात से इंकार नहीं कर रहे हैं, सभी पहलुओं की जांच कर रहे हैं। पुलिस को हाई अलर्ट पर रहने को कहा गया है।

एटीएस दे सकता है दखल

नाव में कोई भी शख्स मौजूद नहीं था। इसमें केवल हरियार थे। ताजा अपडेट के मुताबिक एटीएस इस पूरे मामले की जांच कर सकती है। नाव कहां से आई और कौन लोग इसमें शामिल हो सकते हैं, सभी कड़ियों पर जांच एटीएस की टीम कर सकती है। एटीएस चीफ विनीत अग्रवाल भी मौके पर जाने के लिए हुए रवाना हैं। विनीत अग्रवाल का कहना है कि हम आतंकी एंगल की जांच कर रहे हैं।

पहले भी समुद्र के रास्ते दहलाया जा चुका है मुंबई को : समुद्र के रास्ते दो बार पहले ऐसे ही मुंबई को दहलाया जा चुका है। पहले भी इसी तरह नाव के जरिए हथियारों को मुंबई के अंदर लाया गया था और बड़ी घटनाओं को अंजाम दिया गया था। पुलिस मामले की तह तक पहुंचने की कोशिश में जुटी है। साथ ही एटीएस नजर बनाए है। एके-47 की बरामदगी के बाद एटीएस मामले की जांच कर सकता है।

एक्सप्रेस न्यूज

राजू श्रीवास्तव का ब्रेन नहीं कर रहा फंक्शन

मुंबई, (एजेंसी)। राजू श्रीवास्तव की तबीयत पहले से अधिक बिगड़ गई है। कॉमेडियन सुनील पाल ने बताया है कि राजू श्रीवास्तव की सिर्फ सांस चल रही है, जबकि उनका ब्रेन फंक्शन नहीं कर रहा है। उन्होंने कहा कि उनकी बात राजू के रिश्तेदार से हुई है। 10 अगस्त को राजू श्रीवास्तव को दिल का दौरा पड़ा था, इसके बाद से ही वो अस्पताल में भर्ती हैं। हाल ही में उनकी तबीयत में सुधार था, लेकिन अब फिर उनकी तबीयत तेजी से बिगड़ रही है। राजू श्रीवास्तव के स्वास्थ्य को लेकर सभी परेशान हैं और इस बीच उनके दोस्त व कॉमेडियन ने उनके स्वास्थ्य पर अपडेट दिया है। सुनील पाल ने बताया है कि राजू श्रीवास्तव की तबीयत ज्यादा बिगड़ गई है। मैंने अभी राजू के भतीजे कौशल से बात की और मुझे पता लगा है कि उनका ब्रेन फंक्शन नहीं कर रहा है।

कंकड़बाग में सेना के जवान की हत्या

पटना, (एजेंसी)। बिहार की राजधानी पटना में हत्या का सनसनीखेज मामला सामने आया है। कंकड़बाग में सेना के जवान बबलू कुमार की गोली मारकर हत्या कर दी गई। पुलिस मामले की जांच-पड़ताल में जुटी है और सीसीटीवी फुटेज भी खंगाल रही है। पुलिस का कहना है कि शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा जा रहा है। मृतक के परिजन भी मौके पर पहुंच गए। सेना के जवान की हत्या क्यों की गई, इसकी वजह फिलहाल सामने नहीं आई है। मृतक जवान बबलू कुमार की अरुणाचल प्रदेश में पोस्टिंग थी। वह अपने भाई के साथ रेलवे स्टेशन जा रहा था, तभी उसकी गोली मारकर हत्या कर दी गई। इन दिनों राजधानी पटना में अपराध का ग्राफ बढ़ता ही जा रहा है। बीते दिन नाबालिग छात्रा को दिनदहाड़े सरेआम गोली मार दी गई थी।

कांग्रेस की हल्ला बोल रैली अब 4 सितंबर को

नई दिल्ली, (एजेंसी)। कांग्रेस ने अपनी महंगाई के खिलाफ प्रस्तावित रैली की तारीख आगे बढ़ा दी है। इस रैली को लेकर गुरुवार को दिल्ली में कांग्रेस की बैठक हुई। इसमें अशोक गहलोत, भूपेश बघेल, भूपेन्द्र हुड्डा, अजय माकन, केसी वेणुगोपाल समेत कई बड़े नेता मौजूद रहे। बैठक में फैसला लिया गया कि अब महंगाई पर हल्ला बोल रैली अब 4 सितंबर को होगी। पहले ये रैली 28 अगस्त को प्रस्तावित थी। कांग्रेस सांसद ने जयराम रमेश ने ट्वीट किया कि कोविड-19 के मौजूदा हालात को देखते हुए कांग्रेस पार्टी द्वारा 28 अगस्त को दिल्ली के रामलीला मैदान में आयोजित होने वाली महंगाई पर हल्ला बोल रैली की तारीख आगे बढ़ाई जा रही है। अब यह रैली 4 सितंबर को होगी। इस रैली के जरिए असंवेदनशील मोदी सरकार को जोरदार संदेश दिया जाएगा।

पार्थ, अर्पिता की हिरासत 31 अगस्त तक बढ़ाई गई

कोलकाता, (एजेंसी)। एक निचली अदालत ने एसएससी भर्ती घोटाले में गिरफ्तार प. बंगाल के पूर्व मंत्री पार्थ चटर्जी और मॉडल-अभिनेत्री अर्पिता मुखर्जी की न्यायिक हिरासत की अवधि 31 अगस्त तक बढ़ा दी। एक विशेष अदालत ने बचाव पक्ष के वकीलों की जमानत याचिका खारिज करते हुए दोनों आरोपियों की हिरासत 14 दिन बढ़ा दी। टीएमसी से निलंबित नेता के वकील ने चिकित्सा आधार पर उनके मुवक्किल के लिए जमानत की मांग करते तर्क दिया कि उन्हें हीमोग्लोबिन की कमी है और उनका क्रिएटिनिन स्तर बढ़ गया है, जिससे उन्हें चलने फिरने में समस्या है। याचिका का विरोध करते हुए ईडी के वकील ने कहा कि न्यायालय के निर्देशानुसार चटर्जी को सख्त चिकित्सकीय निगरानी में रखा गया है और उनका नियमित स्वास्थ्य परीक्षण किया जा रहा है।

आठ यूट्यूब चैनल को किया ब्लॉक

फेक न्यूज पर केंद्र की मोदी सरकार की डिजिटल स्ट्राइक

नई दिल्ली ■ एजेंसी

सोशल मीडिया के इस दौर में फेक न्यूज सबसे बड़ी चुनौती सरकार के लिए बन चुकी है। केंद्र सरकार का सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय लगातार इसके खिलाफ कार्रवाई करता रहता है।

ताजा जानकारी के मुताबिक, सरकार ने भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा, विदेशी संबंधों और सार्वजनिक व्यवस्था से संबंधित दुष्प्रचार फैलाने के आरोप में 8 यूट्यूब चैनलों को ब्लॉक कर दिया है।

केंद्र सरकार द्वारा साझा की गई जानकारी के मुताबिक, 7 भारतीय और एक पाकिस्तानी यूट्यूब समाचार चैनल को आईटी नियम, 2021 के तहत ब्लॉक किया गया है। आपको बता दें कि इन यूट्यूब चैनलों को 114 करोड़ से अधिक बार देखा गया है। इसके अलावा इनके 85 लाख 73 हजार सब्सक्राइबर थे। जानकारी के अनुसार यह चैनल इन यूट्यूब चैनलों पर भारत विरोधी फेक न्यूज चलाए जा रहे थे।

इससे पहले इसी साल अप्रैल महीने में इस तरह की कार्रवाई की गई थी। केंद्र सरकार ने तब बड़ा फैसला लेते हुए 22 यूट्यूब चैनलों के भारत में प्रसारण पर रोक लगा दी थी। इन चैनलों को तत्काल प्रभाव से ब्लॉक कर दिया गया था। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के आदेश पर यह कार्रवाई की गई थी। इन चैनलों को भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा, विदेश संबंधों और सार्वजनिक व्यवस्था से संबंधित दुष्प्रचार फैलाने के आरोप में ब्लॉक किया गया था। उनमें 18 भारतीय यूट्यूब समाचार चैनल के अलावा 4 पाकिस्तानी यूट्यूब चैनल भी ब्लॉक किए गए थे।

सांची दूध के दाम बढ़े

कल से आधा लीटर पर एक तो एक लीटर पर देने होंगे दो रुपए ज्यादा

भोपाल ■ राज न्यूज नेटवर्क

तीन दिन पहले अमूल द्वारा दूध के दामों में बढ़ोतरी के बाद गुरुवार को सांची ने भी अपने दूध के दाम बढ़ा दिए। बढ़ी हुई कीमतें शनिवार 20 अगस्त से लागू हो जाएंगी। हालांकि अग्रिम भुगतान करके कार्ड से दूध लेने वालों को इससे थोड़ी राहत मिलेगी। उनके लिए नई दरें 16 सितंबर से लागू होंगी, लेकिन अन्य लोगों को कल से ही सांची के आधा लीटर पैकेट पर 1 रुपए तो एक लीटर के पैकेट पर 2 रुपए ज्यादा चुकाने होंगे।

गुरुवार को दुग्ध संघ के प्रभारी विपणन की ओर से जारी आदेश में दाम बढ़ाने की पुष्टि की गई है। हालांकि नए आदेश में सांची के 10 रुपए वाले 200 एमएल दूध के पैकेट की कीमत नहीं बढ़ाई गई है, लेकिन अन्य सभी ब्रांडों के 500 एमएल और 1 लीटर के दामों में 1 से 2 रुपए की बढ़ोतरी हो गई है। महंगाई के बीच सांची दूध के दाम बढ़ने का असर आम उपभोक्ताओं की जेब और घर के बजट पर पड़ेगा। हालांकि आदेश में कार्डधारी उपभोक्ताओं को 16 अगस्त से 15 सितंबर की अवधि तक ज्यादा दाम चुकाने से राहत मिलेगी।

शनिवार से ये होंगे नए भाव

ब्रांड	पुराने भाव	नए भाव
सांची गोल्ड, लाल पैकेट 500 एमएल	29 रु.	30 रु.
सांची गोल्ड, लाल पैकेट 1 लीटर	57 रु.	59 रु.
सांची शक्ति, हरा पैकेट 500 एमएल	27 रु.	28 रु.
टोण्ड दूध ताजा 500 एमएल	24 रु.	25 रु.
डबल टोण्ड स्मार्ट 500 एमएल	22 रु.	23 रु.
डबल टोण्ड स्मार्ट 200 एमएल	10 रु.	10 रु.
चाह दूध 1 लीटर	52 रु.	54 रु.
चाय स्पेशल दूध 1 लीटर	47 रु.	49 रु.

जम्मू-कश्मीर में अब नॉन लोकल्स कर सकेंगे वोटिंग

श्रीनगर, (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव के मद्देनजर चुनाव आयोग ने बुधवार को एक अहम ऐलान किया। इसके तहत नॉन लोकल्स को मतदाता सूची नाम दर्ज कराने का हक दिया गया है।

विस चुनाव के मद्देनजर निर्वाचन आयोग ने किया ऐलान

चुनाव आयोग के इस फैसले से यहां के सियासी गलियारों में हलचल और तकरार पैदा कर दी है। राज्य के प्रभावशाली नेता चुनाव आयोग के इस फैसले की खिलाफत में उतर आए हैं। इस फैसले पर चर्चा करने जम्मू-कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस-जेकेएनसी ने 22 अगस्त को सर्वदलीय बैठक करने का ऐलान किया है। शीर्ष कश्मीरी नेताओं ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में आगामी चुनावों में गैर-स्थानीय को वोट देने की अनुमति देना विनाशकारी होगा और संतुलन भाजपा के पक्ष में झुकाएगा।

दही-हांडी को खेल श्रेणी में मान्यता

मुंबई, (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने प्रदेश की जनता के लिए बड़ा ऐलान किया। दही-हांडी को खेल श्रेणी में मान्यता दी जाएगी। उन्होंने प्रो गोविंदा प्रतियोगिता की घोषणा की और कहा कि खेल श्रेणी के तहत नौकरी भी मिलेगी। शिंदे ने कहा कि हम सभी गोविंदा के लिए 10 लाख रुपए का बीमा कवर प्रदान करेंगे।

गोविंदा को नौकरी और 10 लाख तक का बीमा कवर

मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने गुरुवार को विधानसभा में दहीहांडी (गोविंदा) की प्रो गोविंदा प्रतियोगिता की घोषणा की। शिंदे ने कहा कि दही हांडी प्रतियोगिता महाराष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान और परंपरा है। प्रतियोगिता की पुरस्कार राशि सरकार देगी। इसके साथ ही मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि इसे खेल श्रेणी में शामिल किया जाएगा और स्पोर्ट्स कोटे के तहत सरकारी नौकरी भी दी जाएगी।

विधानसभा में बोले सीएम

विधायक प्रताप सरनाइक के मुद्दा उठाने पर जवाब देते हुए मुख्यमंत्री शिंदे ने कहा कि दही हांडी महोत्सव के आयोजकों की मांग है कि राज्य सरकार दही हांडी उत्सव को खेलों में शामिल करे और प्रो गोविंदा प्रतियोगिता आयोजित करे। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्पेन और चीन के देशों में इस खेल को खेलों में मानव मीनार (पिरामिड) के रूप में शामिल किया गया है और हमारे यहां कबड्डी, खो-खो और दहीहांडी जैसे खेलों को शामिल किया जाएगा। मुख्यमंत्री शिंदे ने ऐलान किया कि गोविंदा की मृत्यु होने पर वारिस को 10 लाख रुपए की सहायता दी जाएगी। इसके साथ ही, दोनों आंखों या दोनों हाथों, दोनों पैरों या किन्हीं दो महत्वपूर्ण अंगों की विफलता के मामले में उन्हें साढ़े सात लाख रुपए और किसी एक अंग की विफलता या गंभीर चोट के मामले में 5 लाख रुपए की सहायता दी जाएगी।

एसबीआई से 11 करोड़ के सिक्के गायब होने के मामले में कार्रवाई

सीबीआई ने 25 जगहों पर मारे छापे

नई दिल्ली, (एजेंसी)। स्टेट बैंक से 11 करोड़ रुपए के सिक्के गायब होने के मामले में सीबीआई ने देश में 25 स्थानों पर छापेमारी की है। सीबीआई ने गुरुवार को दिल्ली, जयपुर, दौसा, करौली, सवाई माधोपुर, अलवर, उदयपुर और भीलवाड़ा में लगभग 15 तत्कालीन बैंक अधिकारियों और अन्य के ठिकानों पर छापेमारी की है। बता दें कि एसबीआई के मेहंदीपुर बालाजी में 11 करोड़ रुपए के सिक्कों की धोखाधड़ी के मामले में यह कार्रवाई की है।

बता दें कि इस मामले में सीबीआई ने राजस्थान उच्च न्यायालय के आदेशों के अनुपालन करते हुए 13 अप्रैल 2022 को मामला दर्ज किया था और पुलिस स्टेशन टोडाभीम, करौली (राजस्थान) में पहले दर्ज की गई जांच को अपने हाथ में ले लिया था। तलाशी के दौरान बरामद आपत्तिजनक दस्तावेजों की जांच की जा रही है। यह मामला तब सामने आया जब भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) की उपरोक्त शाखा ने अगस्त 2021 में अपने कैश रिजर्व में गड़बड़ी का संकेत देने वाली प्रारंभिक जांच के बाद पैसे की गिनती करने का फैसला किया। सिक्कों की गिनती के लिए एक निजी कंपनी को आउटसोर्स किया गया था। जिसने गिनती के बाद बताया था कि शाखा से 11 करोड़ रुपए से अधिक के सिक्के गायब हैं। इसके बाद एसीबी जयपुर ने अगस्त 2021 में 11 करोड़ रुपए के सिक्कों की कथित धोखाधड़ी मामले में प्राथमिकी दर्ज की थी। गिनती के दौरान लगभग 3,000 सिक्कों के थैलों में महज 2 करोड़ रुपए ही निकले थे, जिन्हें आरबीआई की सिक्का धारण शाखा में स्थानांतरित कर दिया गया था।

पंजाब में 150 करोड़ का घोटाला?

गायब हो गईं 11 हजार पराली वाली मशीनें

केवल कागज पर हुई खरीद

चंडीगढ़, (एजेंसी)। पंजाब में पराली जलाने पर रोक लगाने और वैकल्पिक व्यवस्था करने के बड़े-बड़े दावे किए गए, लेकिन अब एक बड़ी गड़बड़ी सामने आई है। आम आदमी पार्टी की सरकार ने 11 हजार मशीनों के गायब होने को लेकर जांच के आदेश दे दिए हैं। आप सरकार का कहना है कि पराली हैंडलिंग की ये मशीनें केवल कागज पर ही हैं, इन्हें कभी खेतों में नहीं उतारा गया। आरोप है कि अमरिंदर सरकार में 150 करोड़ रुपए का घोटाला किया गया है।

कृषि मंत्री कुलदीप सिंह धालीवाल ने कहा कि जिन मशीनों पर केंद्र सरकार ने छूट दी थी, उनको लेकर रिपोर्ट मिलने के बाद फिल्ड सर्वे का आदेश दे दिया गया है। ये मशीनें किसानों तक नहीं पहुंचीं। क्रॉस चेक करने पर पता चल रहा है कि सरकार ने 90 हजार मशीनें खरीदीं और दावा किया गया कि 11 हजार मशीनें किसानों को दी गईं। यह सारी जिम्मेदारी पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह की थी। कृषि विभाग की जिम्मेदारी भी उन्हीं के पास थी। वहीं कैप्टन अमरिंदर सिंह की पार्टी पंजाब लोक कांग्रेस के प्रवक्ता प्रीतपाल सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री के रूप में मशीन वितरण की सूची बनाना कैप्टन का काम नहीं था। वह कोई फील्ड ऑफिसर नहीं थे।

मंत्री बोले- सीएम के पास भेज दी फाइल

मंत्री धालीवाल ने बताया कि हमने विजिलेंस डिपार्टमेंट के जरिए फाइल को मुख्यमंत्री भगवंत मान के पास भेज दिया है। बता दें कि पंजाब और हरियाणा में पराली जलाना एक बहुत बड़ी समस्या है। इससे दिल्ली और आसपास के इलाकों में प्रदूषण बढ़ता है। ऐसे में इन मशीनों को लाया गया था जिससे कि पराली को जलाने से रोका जा सके और इसको अन्य उपयोग में लाया जा सके। मशीनों के लिए कुल सब्सिडी 1200 करोड़ रुपए निर्धारित की गई थी। मंत्री धालीवाल ने कहा कि अनुमान है कि इन मशीनों को लेकर 150 करोड़ का घोटाला किया गया है। अगर ऐसे ही घोटाले सामने आते रहे तो केंद्र से इस तरह की सुविधा मिलना मुश्किल हो जाएगी। इस मामले में कांग्रेस ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है।

सुनवाई | झूठे केस में फंसे लोगों को मुआवजा देने की व्यवस्था बनाने से किया मना

सुप्रीम कोर्ट ने कहा- यह सरकार को देखना चाहिए

नई दिल्ली ■ एजेंसी

झूठे आपराधिक मुकदमे में फंसाए गए लोगों को मुआवजा देने की व्यवस्था बनाने का आदेश देने से सुप्रीम कोर्ट ने मना कर दिया है। कोर्ट ने कहा है कि यह सरकार के देखने का विषय है। भाजपा नेता कपिल मिश्रा और वकील अश्विनी उपाध्याय की याचिका में 20 साल तक रेप के झूठे आरोप जेल में रहने वाले यूपी के विष्णु तिवारी का उदाहरण दिया गया था। इस तरह के लोगों को मुआवजा देने की मांग की गई थी

याचिकाकर्ताओं ने लॉ कमीशन की 277वीं रिपोर्ट का भी हवाला दिया था। 2018 में सरकार को सौंपी गई इस रिपोर्ट में झूठे मुकदमे में फंसाए गए लोगों को मुआवजा देने की सिफारिश की गई थी। सुप्रीम कोर्ट ने पिछले साल 23 मार्च को इस मामले में केंद्र सरकार को नोटिस जारी किया था।

विषय को नहीं बनाना चाहते जटिल, सरकार करे फैसला

केंद्र सरकार की तरफ से दाखिल जवाब में यह बताया गया था कि उसने लॉ कमीशन की रिपोर्ट पर राज्यों से राय मांगी है। अभी तक 16 राज्यों ने जवाब दिया है। जस्टिस यूयू ललित और एस रविंद्र भाट की बेंच ने केंद्र के जवाब को पढ़ने के बाद कहा कि यह पूरा विषय सरकार की तरफ से विचार करने का है। सुप्रीम कोर्ट अपनी तरफ से आदेश देकर इसे जटिल नहीं बनाना चाहता। याचिकाकर्ता के लिए पेश वरिष्ठ वकील विजय हंसारिया ने जजों को आश्वस्त करने की कोशिश की,लेकिन कोर्ट का कहना था कि मुआवजे की व्यवस्था बनाना निचली अदालत में मुकदमे की प्रक्रिया को और जटिल बना देगा। जजों ने कहा कि अभी भी इस बात की व्यवस्था है कि कोई व्यक्ति झूठे मुकदमे के लिए सरकार से मुआवजा मांग सकता है। बेंच ने यह भी कहा कि अगर निचली अदालत किसी को बरी करती है, तो इसका मतलब यह नहीं कि हाईकोर्ट भी उसी फैसले को बरकरार रखे। ऐसे में निचली अदालत से बरी होने के बाद मुआवजा कैसे दिया जा सकता है? जजों ने यह भी कहा कि मुकदमे में कई लोग सबूतों के अभाव में भी बरी होते हैं।

20 साल तक जेल में रहे विष्णु तिवारी

पिछले साल यूपी के ललितपुर जिले के विष्णु तिवारी का मामला चर्चा में रहा था। उसी को आधार बनाते याचिकाएं दाखिल की गई थीं। विष्णु पर 2000 में उन्हीं के गांव की लड़की ने रेप का आरोप लगाया था। लड़की अनुसूचित जाति की थी। वे 20 साल जेल में रहे हैं।

शीतला सप्तमी का पर्व धूमधाम से मनाया

महिलाओं ने शीतला माता की पूजा कर बासे पकवानों का भोग लगाया, परिवार को निरोगी रखने की कामना की

कुशलगढ से अरूण जोशी की रीपोर्ट

कुशलगढ समेत आसपास के इलाकों में भी शीतला सप्तमी का पर्व धूमधाम से मनाया गया। महिलाओं ने मगरी माता पहाड़ी पर स्थित शीतला माता मंदिर में शीतला माता की पूजा-अर्चना करते हुए बासे पकवानों का भोग लगाया। घर-परिवार में निरोगी, सुख-समृद्दि और खुशहाली की कामना की गई। महिलाएं सुबह जल्दी शीतला माता के मंदिरों में पहुंची और पूजन के बाद घर पहुंचकर बासोड़ा के रूप में इस पर्व को मनाया गया। घरों में सभी लोगों को प्रसाद और भोजन के रूप में बासी चीजें ही दी गई। शीतला माता को रोगों को दूर करने वाली माना जाता है। चिकन पॉक्स यानि चेचक नामक रोग को आम बोलचाल की भाषा में माता ही कहा जाता है। शीतला माता की कृपा पूरे परिवार पर बनी रहे इसलिए शीतला सप्तमी और शीतला अष्टमी का उपवास भी रखा जाता है। इस दिन शीतला माता की पूजा की जाती है। इस उपवास की खास बात यह है कि इस दिन घर में चूल्हा नहीं जलता और माता के प्रसाद सहित पूरे परिवार के लिये भोजन एक दिन पहले ही बनाया जाता है। इसी कारण इसे बासोड़ा भी कहा जाता है। आज के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करते हैं। शीतला माता की पूजा की जाती है। व्रत के साथ घर की महिलाएं शीतला माता की कथा सुनती हैं। माता को भोग लगाने के लिए एक दिन पहले ही रात को मीठे चावल और दूसरे पकवान बनाएं जाते हैं। इस दिन शीतला माता को मीठे चावल, हल्दी, चने की दाल आदि का भोग लगाया जाता है।

बड़े ही उत्साह के साथ धूमधाम से मनाया गया 75 वा स्वतंत्रता दिवस

पत्ना मोहंद्रा

बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया 75 वां गणतंत्र दिवस ग्राम के सभी स्कूलों ने रैली निकालकर और देशभक्ति के गीत गए शासकीय हाई सेकेंडरी स्कूल मोहंद्रा मैं माननीय सरपंच श्री अरुण चौरसिया द्वारा ध्वजारोहण किया इस ध्वजारोहण में माननीय प्राचार्य महोदय हुकुम सिंह यादव तथा शिक्षक जैसे कन्हैया सालक राम शर्मा सुरेंद्र विश्वकर्मा सरदार सिंह राजपूत आर जी पांडे के साथ अन्य शिक्षक भी शामिल हुए।

मोहंद्रा चौकी में किया गया 75 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर किया गया ध्वजारोहण

मरुधर विशेष/ कैमरामैन शिवम रैकवार के साथ संवाददाता से बृजेंद्र

मोहंद्रा। 75 वा स्वतंत्रता दिवस समारोह में चौकी प्रभारी ईश्वर सिंह द्वारा किया गया ध्वजारोहण इस ध्वजारोहण में चौकी के सभी सदस्य दरोगा रंजीत जी आरक्षण नारायणदास के साथ अन्य ग्रामीण भी शामिल हुए।

स्वतंत्रता दिवस पर पांडुपोल हनुमान मंदिर में भी लगाए गए तिरंगे

मालाखेड़ा (सतीश कुमार चौधरी)

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री टीकाराम जूली के निर्देशन में सोनू मीणा के नेतृत्व में सरिस्का अभ्यारण स्थित पांडुपोल हनुमान मंदिर परिसर में भी तिरंगे लगाए गए तथा हनुमान जी महाराज की विधिवत रूप से पूजा अर्चना की गई इस अवसर पर मंदिर महंत बाबूलाल शर्मा, चेतन शर्मा, महेश जोशी, जगदीश सरपंच, जतिन चौधरी, गोविंद जोशी आदि श्रद्धालु उपस्थित रहे।

कठूमर दी बाबा ग्राम सेवा सहकारी समिति को 11वार्डों में किया विभाजन

चार वार्ड आरक्षित, सात अनारक्षित किये

मरूधर विशेष

कठूमर । दिनेश लेखी। उपखंड मुख्यालय पर स्थित दी बाबा ग्राम सेवा सहकारी समिति कठूमर के अध्यक्ष रगवीर सिंह चौधरी की अध्यक्षता में संचालक मंडल की बैठक आयोजित की गई जिसमें आगामी समिति के होने वाले निर्वाचक मंडल के चुनाव के बारे में वार्डो की लॉटरी निकाली गई। समिति के व्यवस्थापक राजेंद्र शर्मा ने बताया कि सहकारी समिति मे कुल 342 ऋणी सदस्य हैं। जिनको वार्डो में विभाजन संचालक मंडल की बैठक में कर दिया गया। जिनमें 11 सदस्य ऋणी सदस्यो के चुनाव होंगे एक वार्ड अऋणी सदस्य का निर्धारित किया गया है। ग्राम सेवा सहकारी समिति में कुल 12वार्ड हैं। जिनमें 11वार्ड ऋणी सदस्यों के एवं 12 वां वार्ड अऋणी सदस्य का रहेगा। जिसके अनुसार चार वार्ड आरक्षित रहेंगे और सात वार्ड अनारक्षित रहेंगे। अनुसार वार्ड नंबर 1 सामान्य, वार्ड नंबर 2 अनुसूचित जनजाति, वार्ड नंबर 3 अनुसूचित जाति, वार्ड नंबर 4 महिला, वार्ड नंबर 5 सामान्य, वार्ड नंबर 6 सामान्य वार्ड, नंबर 7 सामान्य, वार्ड नंबर 8 सामान्य , वार्ड नंबर 9 महिला, वार्ड नंबर 10 सामान्य, वार्ड नंबर 11 सामान्य, वार्ड नंबर 12 अऋणी सदस्यों के लिए सामान्य रहेगा। उन्होंने बताया कि प्रत्येक वार्ड में 31ऋणी सदस्य मतदाता रखे गए हैं। जो अपने मत का प्रयोग करेंगे बाकी वार्ड नंबर 12 जो अऋणी सदस्यों का रहेगा उसमें 279 सदस्य है। जो मत का प्रयोग करेंगे।

लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान पहुंचे दलित बच्चे के घर

मरूधर विशेष

कठूमर। दिनेश लेखी। दिनांक 18 अगस्त 2022 सुराणा सायला जिला जालोरः लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान सांसद दिनांक 17 अगस्त को उदयपुर रात्रि विश्राम के उपरान्त दिनांक 18 अगस्त को सुबह 6 बजे प्रातः सायला तहसील जालोर के गांव सुराणा के लिए प्रस्थान कर प्रातः 10 बजे सुराणा गांव पहुंचे जहां पर दलित समाज के मृतक छात्र इंद्र इंद्र कुमार मेघवाल के परिजनों से मुलाकात कर मृतक छात्र इन्द्र कुमार को श्रद्धांजलि दे कर परिजनों को शान्तना देते हुए उनको विश्वास दिलाया कि एक अध्यापक के द्वारा निर्मम हत्या करने के संबंध मे चिराग पासवान ने कहा कि जब तक राजस्थान की सरकार इस मामले को गंभीरता से नहीं लेती है तब तक लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) अपना संघर्ष करती रहेगी और उन्होंने कहा कि दोषि को फांसी की सजा तथा मृतक छात्र के परिवार को 50 लाख का मुआवजा और परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी दिलवाने की मांग की गई माननीय चिराग पासवान ने राजस्थान की सरकार को इस प्रकरण को लेकर दोषी करार दिया है उन्होंने राजस्थान सरकार की दोगले पन की नीति को गलत करार देते हुए कहा कि यह जो नीति है जब उदयपुर के कन्हैया कुमार की हत्या की गई थी वह पिछड़ी जाति से था उस को लेकर जब राजस्थान के मुख्यमंत्री वहा पर जा सकते हैं और उनके परिवार को 50 लाख रुपए तथा परिवार के दो सदस्यों को सरकारी नौकरी तुरंत प्रभाव से देने आदेश कर सकते हैं तो एक दलित की हत्या की जाती है तब क्यों नहीं इस ओर सरकार का ध्यान क्यों नहीं जाता दलित समाज के बच्चे की जो निर्मम हत्या हुई है इस पर हम गंभीर शोक व्यक्त करते हैं । पासवान ने कहा कि जब कन्हैया कुमार के लिए राजस्थान की सरकार 50 लाख रुपए और दो बच्चों को नौकरी दे सकती है तो क्यों इस दलित परिवार के साथ में मतभेद क्यों इस तरह के सवाल राजस्थान सरकार से पूछे गए और अपनी पार्टी के माध्यम से उन्होंने यह भी कहा कि जितना मेरा प्रयास होगा मैं इस आंदोलन को तब तक जारी रखूंगा जब तक न्याय मिल जाए उन्होंने यह घोषणा भी की कि पीड़ित परिवार उचित न्याय और स्कूल संचालक को फांसी की सजा मिलनी चाहिए तथा स्कूल की मान्यता रद्द करने की मांग की गई और उन्होंने यह भी कहा चिराग पासवान ने मीडिया कर्मियों से प्रेस वार्ता की और प्रेस वार्ता के दौरान कहा कि आज राजस्थान में अनेक ऐसी घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है कि यहां पर दलितों की हत्याएं, बलात्कार, दूल्हे को घोड़ी पर सवार नहीं होने दिया जाता, दलित समाज के व्यक्तियों को मूंछ रखने पर ऐतराज, तथा उनके शवों को श्मशान घाट में जलाने नहीं दिया जाता है इस तरह के संघन्य अपराधो को लेकर राजस्थान की सरकार को दोषी करार देते हुए सरकार पर निशाना साधा और कहा कि राजस्थान की सरकार इस तरह की दमनकारी नीतियों को अपने संज्ञान में नहीं लेती है और इस गम्भीर मामले को लेकर एक उच्चस्तरीय ऐस आई टी जांच कमेटी गठित कर जांच नहीं कराती है तब तक मैं और मेरी पार्टी संघर्ष करती रहेगी इस दौरान उनके साथ प्रवण कुमार राष्ट्रीय अध्यक्ष लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) युवा प्रकोष्ठ व महेन्द्र कुमार ओझा पूर्व प्रदेश अध्यक्ष दलित सेना राजस्थान एवं संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष राष्ट्रीय सामाजिक न्याय एवं मानवाधिकार परिषद तथा लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के प्रदेश अध्यक्ष सूरज कुमार बुराहडिया, इरफान खान प्रदेश अध्यक्ष युवा प्रकोष्ठ राजस्थान,विजय निर्माण जिला अध्यक्ष दलित सेना अजमेर, मोहन लाल बैरवा दलित सेना के प्रदेश उपाध्यक्ष सहित विनोद कुमार गौतम मिडिया प्रभारी राजस्थान सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद थे उसके बाद चिराग पासवान जी जोधपुर से फ्लाइट से दिल्ली रवाना हुए

विप्र कल्याण बोर्ड के सदस्य एवम उदयपुर संभाग प्रभारी के बांसवाड़ा आगमन पर स्वागत किया गया

कुशलगढ से अरूण जोशी कि रीपोर्ट

विप्र कल्याण बोर्ड के सदस्य एवम उदयपुर संभाग प्रभारी के बांसवाड़ा आगमन पर सर्व ब्राम्हण समाज प्रतिनिधि,विप्र फाउंडेशन के सरक्षक मंडल द्वारा सर्किट हाउस में विप्र उपरना ओढ़ा कर श्रीफल भेंट कर तिलक अक्षत लगा कर स्वागत किया गया।नगर परिषद सभापति जैनेन्द्र त्रिवेदी की अध्यक्षता में आयोजित अभिनंदन समारोह में विप्र विध्द्वानो द्वारा जिले में ब्राम्हणों की स्थानीय परिस्थिति,संस्कार,समस्याओं और मंथन कर विप्र कल्याण बोर्ड को राज्य सरकार को अनुसंशा हेतु भेजा गया।इस अवसर पर मुख्य अतिथि विप्र कल्याण बोर्ड के सदस्य सीताराम शर्मा ने विप्र कल्याण बोर्ड के गठन के उध्येष्य और निर्णयों से अवगत कराते हुवे आगामी दिनों में किए जाने वाले कार्यो से अवगत कराया।विप्र मंथन के इस अवसर पर सर्किट हाउस में राजस्थान सरकार के केबिनेट मंत्री महेंद्रजीत सिंह मालविया एवम जिला प्रमुख रेशम मालविया भी उपस्थित हुए। जिनका विप्र फाउंडेशन के पदाधिकारियों द्वारा उपर्ना ओढ़ा कर स्वागत अभिवादन किया गया।

इस अवसर पर सीताराम शर्मा ने बताया की राजस्थान सरकार विप्र कल्याण बोर्ड की अगुवाई में आगामी समय में जिले में विप्र सम्मेलन का आयोजन कर ब्राम्हण समाज को सरकार की लाभकारी योजनाओं से जोड़ने का कार्य करेगी।विप्र फाउंडेशन जिला अध्यक्ष योगेश जोशी ने विप्र कल्याण बोर्ड के गठन को राज्य सरकार द्वारा ब्राम्हण समाज के लिए एक ऐतिहासिक कार्य बताते हुवे कहा की भविष्य में इसकी शक्तियां बढ़ती ही रहेगी अब इसको कोई रोक नहीं पाएगा।साथ ही इसके लिए मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का जिले के ब्राम्हण समाज की तरफ से आभार भी जताया। विप्र फाउंडेशन सरक्षक मंडल संयोजक जयप्रकाश पंड्या ने इस अवसर पर उपस्थित केबिनेट मंत्री महेंद्रजीत सिंह मालविया को वनेश्वर महादेव मंदिर पर श्रावणी कर्म यज्ञोपवीत बदलने हेतु सामुदायिक भवन की आवश्यकता बताई जिसे केबिनेट मंत्री महेंद्रजीत सिंह मालविया ने तत्काल सभापति नगर परिषद जैनेंद्र त्रिवेदी को निर्देशित किया। इस अवसर पर डा0दिनेश भट्ट,ललित कुमार जोशी,जमनालाल भट्ट,राजेंद्र कुमार ध्दीवेदी, पुष्पेंद्र पंड्या,मनोहर जोशी,ईश्वरदास वैष्णव,नवनीत त्रिवेदी,सुभाष भट्ट,ललित मोहन जोशी ने अपने सुझावों से विप्र कल्याण बोर्ड के सदस्य को अगर कराया। इस अवसर पर कैलाश जोशी,अशोक पुरोहित,अशोक चोबिसा,रमेश सेवक शर्मा तथा समाज कल्याण विभाग से पुनीत रावल सहित अनेक विप्र विद्वान उपस्थित रह।विप्र कल्याण बोर्ड सदस्य सीताराम शर्मा नेहरू ने मंदारेश्वर महादेव मंदिर में दर्शन पूजन किया एवम वहा श्रावण मास पूजा कर रहे ब्राह्मणजनो से से भी चर्चा की,एवम माता त्रिपुरा सुंदरी,एवम तलवाड़ा गणेश मंदिर भी दर्शन पूजा करी।

राजकीय महाविद्यालय कठूमर में छात्रसंघ चुनाव की वोटर लिस्ट महाविद्यालय नोटिस बोर्ड पर की चस्पा

मरूधर विशेष

कठूमर। दिनेश लेखी। राजकीय महाविद्यालय कठूमर में छात्रसंघ चुनाव 2022-23 हेतु महाविद्यालय के नियमित विद्यार्थियों की वोटर लिस्ट 18 अगस्त गुरूवार को निर्धारित समय पर महाविद्यालय नोटिस बोर्ड पर चस्पा कर दी गई है । महाविद्यालय के मुख्य निर्वाचन अधिकारी डॉ. रामनाथ खोरवाल ने बताया कि महाविधालय के समस्त नियमित विद्यार्थी मतदाता सूची में अपने से संबंधित समस्त विवरण का अवलोकन करें। इसके पश्चात अगर सूची में कोई त्रुटि पाई जाती है। तो शनिवार 20 अगस्त को प्रातः 10:00 बजे से अपराह्न 1:00 बजे तक मतदाता सूचियों पर महाविद्यालय के चुनाव कार्यालय में आपत्ति दर्ज करा सकते हैं।

कठूमर एईएन कार्यालय से किसान कृषि कनेक्शन से संबधित सामान करें प्राप्त

मरूधर विशेष

कठूमर। कृषि कनेक्शन के डीएनए जिन उपभोक्ताओ के जमा हो चुके है। वे जयपुर विधुत नगम कठूमर सहायक अभियंता कार्यालय पर कनेक्शन संबधित सामान ले सकते है। कार्यवाहक सहायक अभियंता वेदप्रकाश पटेल ने बताया 31 मार्च तक जिन किसानो के कृषि कनेक्शन के डीएन जमा हो चुके है। वे कृषि कनेक्शन से संबधित सामान प्राप्त नही किया है। वे उपखंड़ के शाखा भंडारन से उपलब्ध कर सकते है।

नूरपुर गांव में अज्ञात कारणों से परचून की दुकान में लगी आग लाखों का सामान हुआ स्वाहा

मरूधर विशेष

कठूमर। दिनेश लेखी। बुधवार देर रात्री को उपखंड के नूरपुर गांव में अज्ञात कारणो से परचून की दुकान में आग लग गई। आग से लाखो रूपयों का परचून, डेयरी का सामान और सब्जी जल कर खांक हो गई। वही खेड़ली से पहुची दमकल ने कई घंटे की मशक्कत के बाद ग्रामीणो के सहयोग से आग पर काबू पाया। पीडित दुकानदार मंगलराम खंडेलवाल ने बताया बुधवार रात्री को वह दुकान बंद कर घर आ गया। वही रात्री को आग लग गई । जिसमें दुकान का 2.30 लाख का सारा सामान जल कर स्वाह हो गया।

प्रतिभाएं हुई पुलकित, बालिका स्कूल में दिए ईनाम

कुशलगढ़ से अरुण जोशी की रिपोर्ट

कुशलगढ़। बागीदौरा राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय बागीदौरा में गुरुवार को सहगामी प्रवृत्तियों में अग्रणी रहनेवाली बालिकाओं को पारितोषिक प्रदान किये गए। प्रधानाचार्य विनोद निनामा की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में सांस्कृतिक कार्यक्रम, सामूहिक परेड, राष्ट्रगान गायन में श्रेष्ठ रही छात्राओं को नोट बुक व पेन प्रदान किये गए।

इस मौके पर राजेन्द्र प्रसाद मेहता, प्रदीप आचार्य, नीलेश ठाकुर, ऋतु नागर विशिष्ट अतिथि रहे। कार्यक्रम में हर्षलता तंबोलिया, जितेन्द्र सोनी ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में 15 अगस्त के उपखण्ड स्तरीय कार्यक्रम में प्रस्तुतियां देनेवाली प्रतिभागियों को भी पुरस्कृत किया गया। संचालन विनोद पानेरी ने किया। आभार मकबूल खान पठान ने व्यक्त किया। इस मौके पर प्रधानाचार्य निनामा ने बालिकाओं को शैक्षणिक प्रवृत्तियों के साथ सहगामी कार्यक्रमों में उत्साह से भाग लेने का आह्वान किया। ये जानकारी विनोद पानेरी ने दी।

बामणा स्कूल ओर कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में अमृत महोत्सव के साथ स्वतंत्रता दिवस उत्साह पुर्वक मनाया

कुशलगढ़ से अरुण जोशी की रिपोर्ट

कविवर उमाशंकर जोशी की जन्मभूमि बामणा पुनासण के मध्य स्थित श्री डी.एम.बी.पी. हाई स्कूल और स्व.एस.एच. जोशीएवं बी.के.जोशी आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज सार्वजनिक बालक छात्रावास के संयुक्त उपक्रम में 75वे आजादी का अमृत महोत्सव व हर घर तिरंगा और स्वतंत्रता दिवस को बड़े ही धूमधाम से देशभक्ति के गीतों के साथ मनाया गया समस्त बालक एवं बालिकाओं ने स्कुल एवं कोलेज युनिफॉम मे कतार बद्ध अनुशासित तरीके से खडे थे। 15 अगस्त स्वतंत्रता पर्व का ध्वजारोहण मुख्य अतिथि दिनेशभाई हीरालाल ठाकर कीया। दिनेश ठाकर कि अध्यक्षता में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कॉलेज प्रिंसिपल डॉ. कल्पना बेन पटेल ने मेहमानों का स्वागत अभिवादन किया। इस दौरान कार्यक्रम मे अतिथि विशेष दिनेशभाई चुन्नीलाल त्रिवेदी, विजयभाई पंड्या चिमनभाई पंड्या, हसमुखभाई भट्ट,भानुभाई भट्ट,प्रमुख दिनेशभाई बी भट्ट,उपप्रमुख दूर्गाशंकर के जोशी,मंत्री ईश्वरलाल के पंड़या,सुरेशभाई पंड़या,बामणा सरपंच राजेन्द्रसिंह जोद्धा,आशिषभाई जोशी,स्कूल के आचार्य जी जी पटेल स्कूल एवं कॉलेज के समग्र स्टाफ परिवार और छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

आइडियल पब्लिक स्कूल में जन्माष्टमी उत्सव राधा कृष्णा बनो प्रतियोगिता का आयोजन

कुशलगढ से अरूण जोशी की रीपोर्ट

कुशलगढ। आइडियल पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल कुशलगढ़ मे जन्माष्टमी उत्सव आयोजित किया गया। कार्यक्रम में भैया बहिनों ने गीत,भजन,प्रसंग,नृत्य एवं लघु नाटिका प्रस्तुत कर सभी को झूमने पर मजबूर कर दिया। कृष्ण- सुदामा मिलन की लघुनाटिका देखकर सभी भाव विभोर हो गये।र राधा कृष्ण और सुदामा बने नन्हे मुन्ने भैया बहिन को देखकर सभी मंत्र मुग्ध हो गये। कार्यक्रम प्रधानाचार्य हसमुख जोशी की अध्यक्षता एवं संस्था निदेशक सम्राट सिंह झाला के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ संचालन हिमांशी दोषी एवं जोया मिर्जा ने किया।

तिजारा आर्य समाज मंदिर में वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम का समापन हुआ

मरुधर विशेष राकेश सैनी

तिजारा कस्बे के आर्य समाज के मंदिर में वेद प्रचार सप्ताह श्रावणी पर्व का कार्यक्रम का समापन हुआ प्रधान महेंद्र आर्य ने बताया है कि हर वर्ष की भांति मंदिर में इस वर्ष भी 12 अगस्त से 18 अगस्त तक कार्यक्रम संपन्न हुआ उत्तर भारत के प्रसिद्ध भजन उपदेशक रामनिवास आर्य और वैदिक प्रवक्ता आचार्य रामफल आर्य तथा हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के माणकचंद व विष्णु आर्य भजन व उपदेश दिए इसके अंतर्गत वेदों का वाचन किया गया । अंतिम दिवस प्रातः 8:00 यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ फिरोजपुर झिरका हरियाणा आर्य समाज से भी प्रतिनिधि पहोचे । जिन्हें स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। आर्य समाज मंदिर के मंत्री रामनिवास आर्य ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया । ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। जिसमें श्रद्धालुओं ने प्रसादी ग्रहण की। इस मौके पर शोयदान सिंह आर्य, फतेह सिंह आर्य, ताराचंद आर्य ,फूलसिंह आर्य, रामअवतार आर्य, ख्यालीराम आर्य,हनुमान आर्य, मनीष सैनी, कंचन सिंह आर्य बलवंत शास्त्री श्रीराम आर्य, रोशन लाल आर्य ,सभी लोगों ने सहयोग किया

जसाई में नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर 21 को

मरुधर विशेष/ हवासिंह चौधरी

मुण्डावर। उपखण्ड के जसाई गांव में 21 अगस्त रविवार को सरपंच वीरू पंडित कार्यालय पर निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर स्वर्गीय एचपी नंदा स्मृति में आयोजित किया जाएगा। जसाई सरपंच वीरेन्द्र शर्मा के अनुसार नेत्र रोग चिकित्सा शिविर में निःशुल्क नेत्र रोग जांच, दवा व चश्मा वितरण किये जायेंगे। नेत्र संबंधित रोग ऑपरेशन सपना एनजीओ एवं धीरेंद्र राज शांता महता ट्रस्ट द्वारा किया जाएगा। गौरतलब है कि सामाजिक सरोकार से जुड़े रहने वाले जसाई सरपंच व युवा भगतसिंह सेना प्रदेश अध्यक्ष वीरू पंडित द्वारा निःशुल्क नेत्र रोग चिकित्सा शिविर आयोजित कराने से पूर्व सात बार रक्तदान शिविर भी आयोजित कर चुके है।

जालपिवास गांव के जोहड़ की सरकारी भूमि पर हरा नीम का पेड़ काटा , प्रशासन ने की कार्रवाई

मरुधर विशेष/हवासिंह चौधरी

मुंडावर। निकटवर्ती गोपीपुरा ग्राम पंचायत अंतर्गत जालपीवास गांव की आबादी के पास सरकारी जोहड़ की जमीन पर खाली पड़ी जमीन में अनेकों लोगों ने गवाड़े बना रखे हैं । जिस पर नींम, सिरस, पीपल, बरगद , खेजड़ी के पेड़ लगे हुए हैं । सभी लोगों ने अपने अपने कब्जे में 2,,,2 पेड़ लगा रखे । आपको बता दें गांव के कुछ लोगो ने नीम का पेड़ अवैध रूप से काट दिया । गांव के शिकायतकर्ता मुकेश कुमार पुत्र मातादीन जांगिड़ ने बताया अवैध रूप से नीम का हरा पेड़ काट लिया गया । जो कानून के अनुरूप सही नही है । एक ओर सरकार पौधरोपण कर सन्देश देती है, वही विपरीत जालपिवास गांव में कानून की धज्जियां उड़ती दिखाई दे रही है । उधर ग्रमीणो का मानना है कि नीम के पेड़ के ऊपर से 11 हजार केवी की लाइन जा रही है , गांव में बिजली का आए दिन फाल्ट होता है । इस समस्या को लेकर गांव के कुछ लोगो ने नीम के पेड़ को काट दिया । इस संदर्भ में शिकायतकर्ता ने उपखंड अधिकारी मुंडावर को लिखित में शिकायत की । शिकायत कर्तृता की शिकायत पर पटवारी, पुलिस, सरपंच व गांव के मौजूदा लोग पहुँचे । जिस पर क्षेत्रीय सरपंच व पटवारी ने मौके की जांच कर लकड़ीयो को एकत्रित कर कार्रवाई की है ।

बालिका विद्यालय में मां सरस्वती मंदिर के लिए भूमि पूजन कार्यक्रम हुआ

मरुधर विशेष/हवासिंह चौधरी

मुंडावर। सोडावास कस्बे की राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय परिसर में सोडावास कस्बे के भामाशाह सूबेसिंह चौधरी इंजीनियर द्वारा मां सरस्वती मंदिर के निर्माण के लिए गुरुवार को प्रातः 9:15 बजे पूरन जोशी शास्त्री ने भूमि पूजन कार्यक्रम विधिवत ढंग से करवाया । इस अवसर पर हिन्दू रीति के अनुसार मंत्रोच्चारण किया गया । संस्था प्रधानाचार्य कविता चौधरी ने इस तरह की पहल की तारीफ कर भामाशाह का आभार जताया । इस मौके पर कस्बे को लोग भी उपस्थित रहे ।

प्रसंग

मानवीय गुणों के अवतार श्रीकृष्ण

डॉकमनीष पंडित और डॉकअचर के खगोलीय घटनाओं क आधार पर निष्कर्ष सही लगते हैं कि कृष्ण पौराणिक युग के काल्पनिक पात्र कतई नहीं थे, वे मानव थे और उनमें मानवजन्य तमाम खूबियां और खामियां थीं। इन सबके बावजूद वे एक ऐसे उदात्त नायक थे जो महाभारत युद्ध के नेता और प्रणेता अपने गुणों के कारण बने। आज श्रीकृष्ण की खूबियां हम सबके किलए प्रेरणा स्रोत हैं।

भारतवंशी ब्रितानी शोधकर्ता ने खगोलीय घटनाओं और पुरातात्विक व भाषाई साक्ष्यों के आधार पर दावा किया है कि भगवान कृष्ण हिन्दू मिथक और पौराणिक कथाओं के काल्पनिक पात्र न होते हुए एक वास्तविक पात्र थे। सच्चाई भी यही है। ब्रिटेन में न्यूक्लियर मेडीसिन के फिजिशियन डॉक मनीष पंडित ने अपने अनुसंधान में बताया है कि टेनेसी के मेमफिस विश्वविद्यालय में भौतिकी के प्रोफेसर डॉकनरहरि अचर द्वारा एक शोध पत्र में उल्लेख है कि खगोल विज्ञान की मदद से महाभारत युद्ध के काल का पता लगाया है। इसी आधार पर जब डॉकपंडित ने तारामंडल के साफ्टवेयर की मदद से अचर के निष्कर्षों की पड़ताल की तब वे आश्चर्यचकित रह गये जब दोनों निष्कर्षों में अजीब संयोग पाया गया। कृष्ण का जन्म 3112 बीक्सीकमें हुआ। डॉकपंडित द्वारा बनाई गई दस्तावेजी फिल्म कृष्ण इतिहास और मिथक में बताया गया है कि पांडवों और कौरवों के बीच महाभारत की लड़ाई ईसा पूर्व 3067 में हुई थी।

इन गणनाओं के अनुसार कृष्ण का जन्म ईसा पूर्व 3112 में हुआ था, यानि महाभारत युद्ध के समय कृष्ण की उम्र 54-55 साल की थी। महाभारत में 140 से अधिक खगोलीय घटनाओं का विवरण है। इसी आधार पर डॉक अचर ने पता लगाया कि महाभारत के युद्ध के समय आकाश कैसा था और उस दौरान कौन-कौन सी खगोलीय घटनाएं घटी थीं। जब इन दोनों अध्ययनों के तुलनात्मक निष्कर्ष निकाले गए तो पता चला कि महाभारत युद्ध ईसा पूर्व 22 नवंबर 3067 को शुरू होकर 17 दिन चला। इससे स्पष्ट होता है कि कृष्ण कोई अलौकिक या दैवीय शक्ति न होकर एक मानवीय शक्ति थे। यही कारण रहे कि कृष्ण बाल जीवन से ही जीवनपर्यंत समाजिक न्याय की स्थापना और असमानता को दूर करने की लड़ाई दैव व राजसत्ता से लड़ते रहे। वे गरीब की चिंता करते हुए खेतीहर संस्कृति और दुग्ध क्रांति के माध्यम से ठेठ देशज अर्थ व्यवस्था के विस्तार में लगे रहे।

सामरिक दृष्टि से उनका श्रेष्ठ योगदान भारतीय अखण्डता के लिए उल्लेखनीय रहा। इसीलिए कृष्ण के किसान और गौपालक कहीं भी फसल व गायों के क्रय-विक्रय के लिए मंडियों में पहुंचकर शोषणकारी व्यवस्थाओं के शिकार होते दिखाई नहीं देते कृष्ण जड़ हो चुकी उस राज और देव सत्ता को भी चुनौती देते हैं जो जन विरोधी नीतियां अपनाकर लूट तंत्र और अनाचार का हिस्सा बन गए थे भारतीय लोक के कृष्ण ऐसे परमार्थी थे जो चरित्र भारतीय अवतारों के किसी अन्य पात्र में नहीं मिलता। कृष्ण की विकास गाथा अनवरत साधारण मनुष्य बने रहने में निहित रही। इस महानायक के बहुआयामी चरित्र में वे सब चालाकियां बालपन से ही थीं जो किसी चरित्र को वाक्पटु और उद्दण्डता के साथ निर्भीक नायक बनाती हैं। लेकिन बाल कृष्ण जब माखन चुराते हैं तो अकेले नहीं खाते अपने सब सखाओं को खिलाते हैं और जब यशोदा मैया चोरी पकड़े जाने पर दण्ड देती हैं तो उस दण्ड को अकेले कृष्ण झेलते हैं। वे दण्ड का भागीदार उन सखाओं को नहीं बनाते जो चाव से माखन खाने में भागीदार थे। चरित्र का यह प्रस्थान बिंदु किसी उदात्त नायक का ही हो सकता है।

कृष्ण का पूरा जीवन समृद्धि के उन उपायों के विरुद्ध था, जिनका आधार लूट और शोषण रहा। शोषण से मुक्ति समता व सामाजिक समरसता से मानव को सुखी और संपन्न बनाने के गुर गढ़ने में कृष्ण का चिंतन लगा रहा। इसीलिए कृष्ण जब चोरी करते हैं, स्नान करती स्त्रियों के वस्त्र चुराते हैं, खेल-खेल में यमुना नदी को प्रदूषण मुक्त करने के लिए कालिया नाग का मान मर्दन करते हैं, उनकी वे सब हरकतें अथवा संघर्ष उत्सवप्रिय हो जाते हैं। नकारात्मकता को भी उत्सवधर्मिता में बदल देने का गुर कृष्ण चरित्र के अलावा दुनिया के किसी इतिहास नायक के चरित्र में विद्यमान नहीं हैं। भारतीय मिथकों में कोई भी कृष्ण के अलावा ईश्वरीय शक्ति ऐसी नहीं है जो राजसत्ता से ही नहीं उस पारलौकिक सत्ता के प्रतिनिधि इन्द्र से विरोध ले सकती हो जिसका जीवनदायी जल पर नियंत्रण था

यदि हम इन्द्र के चरित्र को देवतुल्य अथवा मिथक पात्र से परे मनुष्य रूप में देखें तो वे जल प्रबंधन के विशेषज्ञ थे। लेकिन कृष्ण ने रूढ़, भ्रष्ट और अनियमित हो चुकी उस देवसत्ता से विरोध लिया, जिस सत्ता ने इन्द्र को जल प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी हुई थी और इन्द्र जल निकासी में पक्षपात बरतने लगे थे। किसान को तो समय पर जल चाहिए अन्यथा फसल चौपट हो जाने का संकट उसका चैन हराम कर देता है। कृष्ण के नेतृत्व में कृषक और गौ पालकों के हित में यह शायद दुनिया का पहला आंदोलन था, जिसके आगे प्रशासकीय प्रबंधन नतमस्तक हुआ और जल वर्षा की शुरुआत किसान हितों को दृष्टिगत रखते हुए शुरू हुई। पुरुषवादी वर्चस्ववाद ने धर्म के आधार पर स्त्री का मिथकीकरण किया। इन्द्र जैसे कामी पुरुषों ने स्त्री को स्त्री होने की सजा उसके स्त्रीत्व केा भंग करके दी। देवी अहिल्या के साथ छल पूर्वक किया गया दुराचार इसका शास्त्र सम्मत उदाहरण है। आज नारी नर के समान स्वतंत्रता और अधिकारों की मांग कर रही है लेकिन कृष्ण ने तो औरत को पुरुष के बराबरी का दर्जा द्वापर में ही दे दिया था। राधा विवाहित थी लेकिन कृष्ण की मुखर दीवानी थी। ब्रज भूमि में स्त्री स्वतंत्रता का परचम कृष्ण ने फहराया। जब स्त्री चीर हरण के अवसर पर आए तो कृष्ण ने चुनरी को अनंत लंबाई दी। स्त्री संरक्षण का ऐसा कोई दूसरा उदाहरण दुनियां के किसी भी साहित्य में नहीं है इसीलिए वृंदावन में यमुना किनारे आज भी पेड़ से चुनरी बांधने की परंपरा है जिससे आबरू संकट की घड़ी में कृष्ण रक्षा करें। जबकि आज बाजारवादी व्यवस्था ने स्त्री की अर्ध निर्वस्त्र देह को विज्ञापनों का एक ऐसा माल बनाकर बाजार में छोड दिया है जो उपभोक्तावादी संस्कृति का पोषण करती हुई लिप्साओं में उफान ला रही है।

स्त्री खुद की देह को बाजार में उपभोग के लिए परोस रही हैं। कृष्ण का मंतव्य स्त्री शुचिता की ऐसी निर्लज्जता के प्रदर्शन प्रबंधन का हितकारी कहीं भी कृष्ण साहित्य में देखने में नहीं आता। कृष्ण युद्ध कौशल के महारथी होने के साथ देश की सीमाओं की सुरक्षा संबंधी सामरिक महत्व के जानकार थे। इसीलिए कृष्ण पूरब से पश्चिम अर्थात मणीपुर से द्वारका तक सत्ता विस्तार के साथ उसके संरक्षण में भी सफल रहे। मणीपुर की पर्वत श्रृंखला पर और द्वारका के समुद्र तट पर कृष्ण ने सामरिक महत्व के अड्डे स्थापित किए जिससे कालांतर में संभावित आक्रांताओं यूनानियों, हूणों, पठानों, तुर्कों, शकों और मुगलों से लोहा लिया जा सके। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हमारे यही सीमांत प्रदेश आतंकवादी घुसपैठों और हिसंक वारदातों का हिस्सा बने हुए हैं। कृष्ण के इसी प्रभाव के चलते आज भी मणीपुर के मूल निवासी कृष्ण दर्शन से प्रभावित भक्ति के निष्ठावान अनुयायी है। यह अचरज भरा वैभव कोई अद्वितीय मानव ही कर सकता है।

सही मायनों में बलराम और कृष्ण का मानव सभ्यता के विकास में अद्भुत योगदान है। बलराम के कंधों पर रखा हल इस बात का प्रतीक है कि मनुष्य कृषि आधारित अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर है। वहीं कृष्ण मानव सभ्यता के ऐसे प्रतिनिधि हैं जो गायों के पालन से लेकर दूध व उत्पादनों से अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाते हैं। ग्रामीण व पशु आधारित अर्थव्यवस्था को गतिशीलता का वाहक बनाए रखने के कारण ही कृष्ण का नेतृत्व बड़ी उत्पादक जनसंख्या स्वीकारती रही।

प्रमोद भार्गव
(वरिष्ठ पत्रकार)

राज-विचार

चीन की हरकतों से सतर्क रहे भारत

चीन ने भारत को श्रीलंका की तरफ से घेरना शुरू कर दिया है। वह पहले ही पूर्वोत्तर की तरफ से दबाव बनाए हुए है, पाकिस्तान और नेपाल को भी अपने पक्ष में किए हुए है, श्रीलंका में उसकी बढ़ती गतिविधियां भारत के लिए बहुत खतरनाक साबित हो सकती हैं।

आखिरकार चीन जासूसी पोत श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह पर ठहराने में कामयाब हो गया। इसकी जानकारी शनिवार को खुद श्रीलंका सरकार ने दी। यह पोत बैलेस्टिक मिसाइल और उपग्रह का पता लगाने में भी सक्षम है। इसके जरिए भारत के रक्षा ठिकानों और विभिन्न सुरक्षा गतिविधियों के बारे में जानकारी हासिल की जा सकती है। इसलिए भारत ने हिंद महासागर से इसके गुजरने और श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह पर ठहरने को लेकर सख्त एतराज जताया था। पहले तो श्रीलंका ने इस पोत के अपने सीमा क्षेत्र में प्रवेश को मंजूरी देने से इंकार किया, मगर फिर वह चीन के दबाव में आ गया और उसने उसे अपने यहां रुकने की इजाजत दे दी। पहले युआन वांग 5 नामक इस पोत को हंबनटोटा बंदरगाह पर 11 अगस्त को पहुंच कर 17 अगस्त तक रसद और ईंधन आदि के लिए रुकना था, पर अब यह 16 से 22 अगस्त तक वहां ठहरेगा। इससे स्वाभाविक ही भारत की चिंता बढ़ गई है।

श्रीलंका का यह बंदरगाह भारतीय सीमा से लगभग सटा हुआ है। चीन के इस जासूसी पोत की सूचनाएं एकत्र करने की क्षमता का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि इसके जरिए पांच हजार किलोमीटर से भी अधिक दूरी तक की आवाजों को भलीभांति सुना जा सकता है। चीन की भारत के प्रति सामरिक मंशा छिपी नहीं है। वास्तविक नियंत्रण रेखा पर दोनों देशों के बीच लगातार तनाव बना रहता है। उसने भारतीय सीमा में घुस कर जमीन भी हथिया रखी है। ऐसे में वह श्रीलंका में अपनी उपस्थिति बनाए रख कर भारत की सुरक्षा को बहुत आसानी से चुनौती दे सकता है। हंबनटोटा बंदरगाह से भारत के रक्षा ठिकानों पर नजर रखी जा सकती है। इस बात से श्रीलंका अनजान नहीं है, मगर वह पांच साल पहले ही इस बंदरगाह को चीन के पास निन्यानबे साल के लिए गिरवी रख और वहां चीन को अपनी रक्षात्मक गतिविधियां संचालित करने के करार पर हस्ताक्षर कर अपने अधिकार गंवा चुका है। आठ साल पहले भी चीन ने इसी तरह श्रीलंका में अपनी एक पनडुब्बी भेजी थी, जिसे लेकर भारत ने कड़ा एतराज जताया था और दोनों देशों के रिश्तों में खटास आ गई थी।

अभी श्रीलंका की आर्थिक स्थिति खस्ताहाल है और उसे लगता है कि इस समय चीन ही उसका तारनहार साबित हो सकता है। हालांकि जब श्रीलंका में जन-विद्रोह हुआ और वहां खाने-पीने की चीजों का भी संकट पैदा हो गया, उस समय चीन चुप्पी साधे हुए था, तब भारत ने ही रसद आदि भेज कर उसकी मदद की। भारत सदा से श्रीलंका का करीबी दोस्त रहा है, मगर चीन ने उसे कर्ज देकर इस रिश्ते में दरार पैदा कर दी है। चीनी बंदरगाह पर जासूसी जहाज भेज कर चीन ने भारत पर मनोवैज्ञानिक दबाव बनाना शुरू कर दिया है। हालांकि भारत सरकार ने कहा है कि वह चीन की इन गतिविधियों को लेकर सतर्क है, पर चीन जिस तरह विस्तारवादी नीतियों के चलते चालें चलता रहता है, उसमें उसकी नीयत पर बहुत भरोसा ठीक नहीं।

खाद्य सुरक्षा दे रही मजबूती

उचित मूल्य की दुकान से सब्सिडी वाले अनाज खरीदने की योजना नरेन्द्र मोदी सरकार के मूल दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करती है। सार्वजनिक नीति इस तरह से तैयार की जाती है कि यह समाज के सबसे गरीब और वंचित समुदायों को लाभान्वित करे। यह दर्शन ही इस सरकार के आठ परिवर्तनकारी वर्षों के दौरान सभी नीतियों और उपलब्धियों की मूल भावना रही है।

लगभग 80 करोड़ भारतीयों को पूरे देश में किसी भी उचित मूल्य की दुकान से सब्सिडी वाले अनाज खरीदने की स्वतंत्रता है। यह सुविधा लोगों को खाद्य सुरक्षा देने के साथ अभूतपूर्व रूप से सशक्त भी बना रही है और ऐसा लगता है कि देश भर में एक मूक क्रांति चल रही है। यह मोदी सरकार के कल्याण और गरीब-समर्थक दृष्टिकोण को एक नई ऊंचाई पर ले जाती है और ऐसी प्रक्रियाओं की शुरुआत करती है, जिनका देश पर परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ेगा, जो लोगों की परिकल्पना से भी अधिक होगा। उच्च प्रभाव वाली कल्याणकारी योजना नहीं है, जो कि वंचितों का समर्थन और पोषण करती है, बल्कि उचित मूल्य की दुकानों के बीच प्रतिस्पर्धा को भी जन्म देती है और एक आर्थिक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है। अब प्रवासी शहरों में भी सब्सिडी वाले अनाज खरीदने में सक्षम हैं और इस बचत का उपयोग अन्य उत्पादों की खरीद में कर सकते हैं।

भारत में, किसी खास सीजन के दौरान लगभग छह करोड़ लोग दूसरे राज्यों में और लगभग आठ करोड़ लोग अपने ही राज्य के अन्य हिस्सों में प्रवास करते हैं। ओएनओआरसी ओडिशा, बिहार, पश्चिम बंगाल, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश सहित विभिन्न राज्यों में प्रवासी श्रमिकों के लिए एक गेम चेंजर सिद्ध हुआ है। इससे पहले, जब ऐसे श्रमिक रोजगार के लिए शहरों में जाते थे, तो वे सब्सिडी अनाज पाने की अपनी पात्रता खो देते थे, क्योंकि उनकी यह सुविधा अपने निवास-स्थान के उचित मूल्य की दुकान से जुड़ी होती थी। यदि वे किसी शहर में उचित मूल्य की दुकान पर पंजीकृत होंगे, तो उनके परिवार को बाजार की ऊंची दरों पर अनाज खरीदना पड़ेगा!

ओएनओआरसी के साथ, श्रमिक और उनके परिवार दोनों को लाभ मिल सकता है। उनकी बचत बहुत अधिक है, क्योंकि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत सब्सिडी वाले अनाज के अलावा, उन्हें प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत आपूर्ति भी निःशुल्क दी जा रही है। चूंकि योजना भारतीय श्रमिकों को आत्मनिर्भर बना रही है, इसलिए इसे अब आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत प्रधानमंत्री के प्रौद्योगिकी संचालित प्रणालीगत सुधारों का भी हिस्सा बनाया गया है। इस योजना के अन्य दूरगामी प्रभाव भी हैं। दशकों तक पड़ोस की राशन की दुकान का एकाधिकार रहा था। लाभार्थियों के पास एक विशेष उचित मूल्य की दुकान पर जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। दुकान के मालिकों का एकछत्र राज होता था और गुणवत्ता बनाए रखने के लिए कोई प्रोत्साहन भी मौजूद नहीं था। ओएनओआरसी, न केवल प्रवासियों को, बल्कि प्रत्येक लाभार्थी को, किसी अन्य उचित मूल्य की दुकान से अनाज खरीदने का विकल्प देता है, यदि वह दुकानदार बेहतर गुणवत्ता वाले अनाज बेच रहा है, या बेहतर सेवा प्रदान कर रहा है।

एक विक्रेता की देश के सभी राज्यों में स्थित कुल 5 लाख से अधिक दुकानों से प्रतिस्पर्धा है। यह एक ऐतिहासिक बदलाव है, क्योंकि यह दुकानदारों को गुणवत्ता के प्रति जागरूक होने और प्रतिस्पर्धी बनने के लिए प्रेरित करता है। लाखों उचित मूल्य की दुकानों में प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने से, देश के कारोबारी माहौल में समग्र रूप से सुधार होगा, जिससे देशवासियों को वस्तुओं और सेवाओं की बेहतर गुणवत्ता प्राप्त होगी। व्यापार करने के तरीकों में इस तरह के बदलाव से छोटे व्यवसायों को तेजी से विकास करने का मौका मिलेगा, लेकिन इसके लिए उन्हें गुणवत्ता में सुधार और निर्यात बाजार में प्रवेश करने की भी आवश्यकता होगी। इससे बड़ी संख्या में रोजगार के अवसरों का भी सृजन होगा। एक राष्ट्र, एक राशन कार्ड ने पहले ही बहुत मजबूत शुरुआत कर दी है। शहरी गरीब जैसे कूड़ा बीनने वाले, सड़क पर रहने वाले, संगठित और असंगठित क्षेत्रों के अस्थायी कर्मचारी समेत करोड़ों श्रमिक व दिहाड़ी मजदूर तथा घरेलू कामगार इस अग्रणी योजना का लाभ उठा रहे हैं।

अगस्त, 2019 में इस योजना की शुरुआत के बाद से, मूल स्थान की बजाय अन्य स्थानों पर हुए 80 करोड़ लेनदेन दर्ज किए गए हैं। इनमें लाभार्थियों को नियमित होने वाले एनएफएसए और पीएमजीकेएवाई खाद्यान्न वितरण के साथ राज्य के अन्य हिस्सों में और दूसरे राज्यों के हुए लेनदेन दोनों शामिल हैं। इनमें अप्रैल 2020 के बाद से कोविड अवधि के दौरान दर्ज किये गए 69 करोड़ लेनदेन भी शामिल हैं। देश में डिजिटल इंडिया पर प्रधानमंत्री के जोर ने देश के क्षमता-विकास में योगदान दिया है। प्रौद्योगिकी की सहायता से महामारी की चरम स्थिति के दौरान देश न केवल घर से काम करने (वर्क-फ्रॉम-होम) के नियमों को सहजता से अपनाने में सफल रहा, बल्कि इससे गरीबों और जरूरतमंदों को भोजन कराने में मदद मिली। वर्तमान में 100 प्रतिशत राशन कार्ड डिजिटल हो गए हैं। इसके अलावा, उचित मूल्य की दुकानों में लगभग 5.3 लाख (99 फीसदी) से अधिक इलेक्ट्रॉनिक प्वाइंट ऑफ सेल उपकरण स्थापित किए गए हैं। सरकार ने यह सुनिश्चित करने अतिरिक्त प्रयास किए हैं, ताकि लाभार्थी योजना का लाभ उठा पाएं। इसे सुविधाजनक बनाने के लिए, खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग ने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत अधिक लाभार्थियों को शामिल करने के उद्देश्य से 11 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के लिए प्रायोगिक आधार पर सामान्य पंजीकरण सुविधा शुरू की है।

इसके अलावा, विभिन्न मंत्रालयों और विभागों ने इस योजना के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए रणनीतिक आउटरीच और संचार से जुड़े अपने प्रयासों को समन्वित किया है। सरकार ने 167 एफएम रेडियो और 91 सामुदायिक रेडियो स्टेशनों का उपयोग करके हिंदी व 10 अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में एक रेडियो-आधारित अभियान चलाया। ट्रेनों में यात्रा करने वाले प्रवासी कामगारों को प्रधानमंत्री का संदेश देने 2400 रेलवे स्टेशनों पर घोषणाओं और प्रदर्शनों की व्यवस्था की गई। संदेश के व्यापक प्रसार के लिए सार्वजनिक बसों का भी उपयोग किया गया। यह योजना नरेन्द्र मोदी सरकार के मूल दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करती है। सार्वजनिक नीति इस तरह से तैयार की जाती है कि यह समाज के सबसे गरीब और वंचित समुदायों को लाभान्वित करे। यह दर्शन ही इस सरकार के आठ परिवर्तनकारी वर्षों के दौरान सभी नीतियों और उपलब्धियों की मूल भावना रही है।

शासन के इस दर्शन और दृष्टिकोण ने ही गरीब लोगों को बैंक खाते, सीधे नकद अंतरण, स्वास्थ्य बीमा, हर गांव में बिजली, दूरदराज के इलाकों में भी अच्छी गुणवत्ता वाली ग्रामीण सड़कों और गरीबों को रसोई गैस की आपूर्ति सहित अन्य सुविधाएं दी हैं। आजादी की 75वीं वर्षगांठ पर, भारत तेजी से सभी के लिए विकल्पों की अधिक स्वतंत्रता की ओर आगे बढ़ रहा है। आइए हम उत्सव मनाएं और इस विकल्प सुविधा को सक्षम बनाएं। ताकि जो लोग आज भी विकास की धारा से पिछड़े हैं, उन्हें देश के साथ आगे बढ़ने का मौका मिल सके।

पीयूष गोयल
(केंद्रीय उपभोक्ता मामलों के मंत्री)

ट्विटर

चीन के जासूसी पोत के श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह पर आने को लेकर भारत पूरी तरह सतर्क है। रक्षा सूचनाओं को चीन के हाथ में कतई नहीं जाने दिया जाएगा।

राजनाथ सिंह, रक्षा मंत्री

चीन हबनटोटा बंदरगाह पर क्या करेगा क्या नहीं, यह उसे ही पता है। मगर उसकी यह हरकत बता रही है कि वह चारों तरफ से भारत को घेरना चाह रहा है।

कमर आगा, रक्षा विशेषज्ञ

सत्यार्थ

इंसानियत की रक्षा

यह उस समय की बात है, जब देश आजाद नहीं हुआ था। पश्चिम बंगाल के मिदनापुर में एक अंग्रेज जज थे- मिस्टर किली। उनका एक भारतीय नौकर था। एक बार वह बाजार से सामान लेकर आ रहा था कि बंगले के बाहर एक पागल कुत्ते ने उसे काट लिया। नौकर के रोने की आवाज सुन जज साहब उसके पास आए और उन्होंने तुरंत कुत्ते के काटने की जगह पर अपना मुंह लगा दिया और सारा विषैला खून चूस कर उगल दिया। बाद में मरहम-पट्टी करने के बाद उसे वह एक अंग्रेज डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने जब यह पूरा वाकया सुना, तो उसे आश्चर्य हुआ। वह बोला- आपने बेवकूफी की है। इससे तो आपकी जान भी जा सकती थी। एक अंग्रेज होकर आपने एक मामूली हिंदुस्तानी नौकर के लिए अपनी जान के साथ खिलवाड़ क्यों किया? जज साहब बोले-यह हमारा नौकर जरूर है, पर उसमें हम और आप, दोनों से ज्यादा इंसानियत है और इंसानियत की रक्षा के लिए मैं जान भी दे सकता हूं। डॉक्टर की समझ में कुछ नहीं आया। उसने कहा- आप क्या कह रहे हैं, मैं समझा नहीं। जज ने कहा- एक बार मैं इसे साथ लेकर दूर गया था। रास्ते में कुछ बदमाशों ने मेरी हत्या करने की कोशिश की, लेकिन इसने अपनी जान की परवाह नहीं की और मुझे बचाने के लिए बदमाशों से भिड़ गया। उनके पास चाकू था और छीना-झपटी में इसे गहरी चोट लगी। बदमाश कह रहे थे, तू भाग जा, पर इसने कहा कि मैं मालिक को छोड़कर नहीं जा सकता। अब आप ही बताएं कि आज मुझे क्या करना चाहिए था? इसे बचाना क्या मेरा कर्तव्य नहीं था? इसे कुछ हो जाता, तो इंसानियत कलंकित हो जाती। जज साहब के इस जवाब से डॉक्टर का सिर शर्म से झुक गया।

मनीषा देवी

मुख्यमंत्री कोरोना सहायता योजना अंतर्गत पेंशन व पालनहार राशि नही मिली, पीड़ित परिवार दर दर की ठोकरें खाने को मजबूर

मरुधर विशेष/ हवासिंह चौधरी।

मुंडावर। उपखण्ड छेत्र में सोडावास ग्राम पंचायत के गांव धौकल नगर अंतर्गत सुमन देवी धर्मपत्नी स्वर्गीय राजकुमार यादव ने बताया की राजस्थान सरकार की ओर से मुख्यमंत्री कोरोना सहायता योजना में एक लाख रु एक्स ग्रेसिया व उच्चतम न्यायालय के आदेश के अनुपालना में कोविड-19 मृतक आश्रित को अनुग्रह सहायता राशि पचास हजार का भुगतान तो हो चुका है। मगर आज तक मुख्यमंत्री कोरोना सहायता में पेंशन एवं पालनहार योजना की राशि का भुगतान पीड़ित परिवार को नहीं हो पा रहा है। जिसके चलते पीड़ित परिवार सरकारी कार्यालयों में दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर है। उल्लेखनीय है कि इस संदर्भ में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग जयपुर ने भी 24 मई 22 को पीड़ित परिवार को पेंशन व पालनहार योजना की राशि के संदर्भ में पत्र लिखकर भुगतान के संदर्भ में लिखा मगर उनकी कोई पुकार अभी तक नहीं सुनी जा रही है। कोरोना मृतक राजकुमार यादव की पत्नी ने जिलाप्रशासन से पेंशन एवं पालनहार राशि दिलवाए जाने की गुहार की है।

बानसूर में भगवान कृष्ण की शोभायात्रा निकाली

मरुधर हिन्द/रमाकान्त शर्मा

बानसूर कस्बे के अलवर रोड स्थित श्री कृष्ण छात्रावास में श्री कृष्ण भगवान की भव्य शोभायात्रा व मनमोहक झांकियों का प्रदर्शन किया गया ।शोभायात्रा छात्रावास से चलकर कस्बे के मुख्य मार्गो से होती हुई वापस छात्रावास में संपन्न हुई। कस्बे में जगह जगह शोभा यात्रा का स्वागत किया गया । शोभायात्रा में राधा कृष्ण ,शिव पार्वती जी एवं अघोरी की झांकियां भी निकाली गई ।यादव समाज अध्यक्ष किशन चंद यादव ने बताया कि दिनांक 19 अगस्त 2022 को यादव समाज द्वारा छात्रावास में कृष्ण जन्माष्टमी व प्रतिभा सम्मान समारोह मनाया जाएगा जिसमें मुख्य अतिथि लेफ्टिनेंट जनरल सत्यवीर यादव व विशिष्ट अतिथि उद्योगपति अनिल यादव एवं अध्यक्षता आचार्य राजकुमार जी शास्त्री जी करेंगे ।

बानसूर में कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला की अस्थि कलश विसर्जन यात्रा का स्वागत किया गया

मरुधर हिन्द/रमाकान्त शर्मा

बानसूर – स्व.कर्नल किरोड़ी सिंह बैसला की अस्थि कलश विसर्जन यात्रा आज दोपहर बाद बानसूर पहुंची ।जहां समाज के हजारों की संख्या में लोगों ने अस्थि कलश यात्रा का भव्य स्वागत किया। अस्थि कलश यात्रा कर्नल बैंसला के बेटे विजय बैंसला के नेतृत्व में चल रही है। अस्थि विसर्जन यात्रा राजस्थान के कई इलाकों से होती हुई बानसूर पहुंची जहां बुटेरी टोल से ही समाज के लोगों ने पुष्प वर्षा कर भव्य स्वागत किया। वही यात्रा बाइक रैली से सुभाष चौक, अम्बेडकर सर्किल से होती हुई कस्बे के मुख्य मार्गों से होकर निकली। यह अस्थि कलश यात्रा अजमेर पहुंचेगी। जहां अस्थियों का विसर्जन किया जाएगा । जहां स्वर्गीय किरोड़ी लाल बैंसला को श्रद्धांजलि अर्पित की गई और विजय बैंसला ने सैकड़ों समाज के लोगों को संबोधित किया । यात्रा में बाइक और चोपहिया वाहन भी शामिल थे। स्थानीय पुलिस प्रशासन जाब्ता व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात रहा ।

सेंट जेवियर स्कूल बानसूर में कृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाया गया

मरुधर हिन्द/ रमाकान्त शर्मा

बानसूर। कस्बे के बाई पास स्थित सेंट जेवियर स्कूल में कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाया गया । जिसमे बच्चों के द्वारा भगवान कृष्ण के जन्म पर आधारित झांकिया सजाई गई तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति भी दी गई।कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व अधिशाषी अभियंता सज्जन कुमार मिश्रा ने की तथा विशिष्ट अतिथि सीबीईओ मनोज शेखावत, एसीबीईओ इंद्राज गुर्जर, बानसूर महाविद्यालय के प्रिंसिपल डॉ राधेश्याम शर्मा, जिलापरिषद बीकानेर के एइन हँसराज व व्याख्याता यादराम रहे।सभी अतिथियों ने बच्चों को भगवान श्री कृष्ण के पद चिन्हों पर चलने का आवाहन किया।इससे पूर्व स्कूल निदेशक अशोक कुमार ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।इस मौके पर स्कूल चैयरमेन आरसी यादव व प्रिंसिपल राकेश सिंह व धनालाल यादव सहित स्कूल स्टाफ उपस्थित रहे।

न्यू बाल विद्या भवन उच्च प्राथमिक विद्यालय कुशलगढ़ श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव मनाया गया

कुशलगढ़ से अरुण जोशी की रिपोर्ट

कुशलगढ़। न्यू बाल विद्या भवन उच्च प्राथमिक विद्यालय कुशलगढ़ पर संस्था प्रधान तेजपाल सिंह में जादव की अध्यक्षता में श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव मनाया गया। जन्माष्टमी के रंगारंग कार्यक्रम में विद्यालय के छात्र-छात्राओं में नायरा मकरानी, एनी मकरानी ,चंचल राठौड़, मीनाक्षी डामोर,रवीना सिंगाड़,अक्षिदामा, भूमिका प्रजापत, इरम फातमा, मंतशा मंसूरी, हिमांशी सांखला, दक्ष प्रजापत, रोशन ताहिरा शेख आदि छात्र/छात्राओं ने एक से बढ़कर एक गीत, कविता व नृत्य की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में राधा और कृष्ण का वेश धरे बच्चे नृत्य कर रहे थे ,कार्यक्रम में विद्यालय के बच्चों ने कृष्ण की बाल लीलाओं का नाटक मंचन किया। कार्यक्रम में धूलसिंह दामा, मनीष घोती, राजेंद्र प्रजापत, महेश खड़िया, सुशीला डामोर, संगीता सोनी, कमरू निशा मकरानी,दिव्या सेन, तनीषा प्रजापत, मोनिका प्रजापत, तयबाह सिंधी,पूजा प्रजापत, सीमा प्रजापत, आदि विद्यालय स्टाफ ने सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन नरसिंह देवदा ने किया व आभार प्रदर्शन कविता सोनी ने माना।

हिंदू जागरण मंच द्वारा आयोजित अखंड भारत संकल्प दिवस एवं भारत माता की महाआरती, उच्च माध्यमिक आदर्श विद्या मंदिर खेल मैदान झोटवाड़ा में संपन्न हुआ

मरूधर विशेष/खेमचन्द गुप्ता

अखंड भारत संकल्प दिवस एवं भारत माता की महाआरती, हनुमान चालीसा और वीर शहीदों को समर्पित देश भक्ति गीतों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक- महावीर सिंह जी करड. (संयोजक एवं अध्यक्ष झोटवाड़ा थाना, हिंदू जागरण मंच) ने बताया कि कार्यक्रम मैं श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर श्री बालमुकुंदाचार्य जी महाराज- हाथोज धाम एवं श्री श्री 108 श्री विष्णु दास जी महाराज लाल दास जी की बगीची, शिव-हनुमान मंदिर, झोटवाड़ा का सानिध्य एवं आशीर्वाद रहा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त- कर्नल जगदीश चंद्र जी एवं मुख्य वक्ता- डॉ. शैलेंद्र जी- प्रांत प्रचारक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जयपुर प्रांत रहे एवं इसके साथ ही श्री तुलसी नारायण जी- (वरिष्ठ प्रचारक एवं सामाजिक समरसता प्रमुख राजस्थान क्षेत्र राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) ,श्री प्रताप भानु सिंह जी शेखावत- (अध्यक्ष- हिंदू जागरण मंच, जयपुर प्रांत) श्री सुभाष चंद्र जी शर्मा (प्रांत महामंत्री- हिंदू जागरण मंच)श्री मोहन जी बालाहेडी -प्रांत कोषाध्यक्ष) श्री विशाल जी भाई साहब (विभाग प्रचारक- जयपुर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) डां. महावीर सिंह बलवदा (प्रांत मंत्री- हिंदू जागरण मंच) युवा नेता- अभिमन्यु सिंह जी राजवी एवं हिंदू जागरण मंच, विभाग उपाध्यक्ष -दीपक जी अग्रवाल एवं विभाग सह युवा वाहिनी प्रमुख- विक्रम सिंह जी शाहपुरा, हिंदू जागरण मंच जिला महामंत्री- नवीन जी शर्मा,जिला उपाध्यक्ष -शीतल जी जैन ,ओम प्रकाश जी जांगिड़, जिला मंत्री- लाखन सिंह जी, अनिल जी जांगिड़, जिला बेटी बचाओ प्रमुख - ओम सिंह जी सोलंकी, जिला सह कोषाध्यक्ष - योगेश जी शर्मा, जिला सह संपर्क प्रमुख -श्री अरविंद जी शर्मा, जिला प्रचार प्रमुख -श्री प्रमोद जी बागड़ा,जिला कार्यकारिणी सदस्य- श्रीमती आंचल आवाना, संजय जी राजपुरोहित के साथ-साथ हिंदू जागरण मंच, जिला/ विभाग एवं थानों के सभी कार्यकर्ता बंधु -भगिनी एवं कार्यक्रम आयोजन समिति के श्री हिम्मत सिंह जी छापोली, श्री अजीत जी जोशी ,श्री रमेश जी कटारिया, श्री योगेश जी शर्मा ,श्री नारायण जी सोनी, श्री शंकर जी सेन, श्री गिरिराज जी शर्मा, श्री ओम सिंह जी आसलसर, श्री जितेंद्र सिंह जी और क्षेत्र के पार्षद एवं जनप्रतिनिधि, व्यापार मंडलों के पदाधिकारियों सहित हजारों की संख्या में युवा शक्ति, मातृशक्ति एवं प्रबुद्धजन उपस्थित रहा।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता- डॉ. शैलेंद्र जी ने भारत के पुनः अखंड होने एवं भारत पुनः विश्व गुरु बनेगा के विस्तृत स्वरूप के बारे में बताते हुए कहा कि भारत से अलग हुए सभी देश आज भारत की ओर आशा भरी नजरों से देख रहे हैं।भारत के तिरंगे की ताकत का एहसास पूरे विश्व को हो रहा है।आज अखंड भारत से अलग हुए अफगानिस्तान, नेपाल, भूटान ब्रह्मा, तिब्बत, श्रीलंका, पाकिस्तान, बांग्लादेश में भी आज भी भारतीय संस्कृति के प्रतीक चिन्ह मौजूद हैं।उन्होंने कहा कि भारत के कदम पुनः अखंड होने की ओर बढ़ चले हैं। और यह अखंड भारत का संकल्प अवश्य साकार होगा। बस हम सब भारतवासियों को इस अखंडता के संकल्प की ज्योत को जलाए रखना है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि- कर्नल कर्नल जगदीश चंद्र जी ने हमारी भारतीय सेना के वीरता, साहस, पराक्रम के बारे में बताते हुए कहा कि भारत के वर्तमान नेतृत्व एवं भारतीय सेना ने चीन जैसे देश को भी अपनी ताकत का एहसास करवा दिया है।आज भारतीय सेना का साहस पूरे विश्व में शिखर पर है।

कार्यक्रम की प्रस्तावना रखते हुए हिंदू जागरण मंच जिला- अध्यक्ष मुरारी जी शर्मा ने बताया कि हिंदू जागरण मंच अखंड भारत संकल्प दिवस के यह कार्यक्रम पूरे भारत में आयोजित कर रहा है। विद्याधर जिले में अखंड भारत के कार्यक्रम वार्ड स्तर तक आयोजित किए गए हैं संपूर्ण जिले में 48 कार्यक्रम अभी तक आयोजित हुए हैं ,और यह निरंतर चल रहे हैं।

कार्यक्रम में उपस्थित हजारों जनसमूह ने भारत माता की जय घोष एवं वंदे मातरम से आसमान को गुंजायमान रखा।

कार्यक्रम संयोजक- महावीर सिंह जी करड. ने बताया कि कार्यक्रम का समापन भारत माता की महाआरती के साथ संपन्न हुआ।

महावीर सिंह जी करड. वह रमेश कटारिया थाना झोटवाड़ा महामंत्री ने कार्यक्रम में सहयोग करने वाले सभी देश प्रेमियों का हृदय से आभार व्यक्त किया एवं सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

भीम सेना के कार्यकर्ताओं ने जालौर में दलित छात्र की हुई हत्या के विरोध में ज्ञापन सौंपा

मरूधर विशेष

कठूमर। दिनेश लेखी। उपखंड मुख्यालय पर अखिल भारतीय भीम सेना के द्वारा जालौर के सुराणा गांव में दलित छात्र की हुई हत्या के विरोध में तहसीलदार गिरधर सिंह मीणा को विभिन्न मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा। अलवर जिला अध्यक्ष रविशंकर एवं भरतपुर संभाग अध्यक्ष कमल सिंह के नेतृत्व में कठूमर तहसीलदार को ज्ञापन सौंपा गया प्रमुख मार्गो से निकलते रैली के रूप में नारे लगाते हुए तहसील मुख्यालय पहुंचे।इस मौके पर राजूराम जाटव, विक्रम सिंह, दीनदयाल ,ऋतु कुमार ,सुभाष ,संदीप ,महेश ,किशोरी,राम अवतार नगर, श्याम सुंदर उपसरपंच प्रतिनिधि, उमेश ,सनी, विपिन आदि मौजूद रहे।

मैं तुम्हारा सिर दबाना चाहता हुँ

मैं ज़्यादा तो नही कुछ पल साथ रहना चाहता हुँ
जिस राह पर चले थे तुम उस राह पर मै चलना चाहता हुँ

तुम्हारे साथ रह कर मैं, तुम्हारे पास रह कर मैं
तुम्हारे सिर में दर्द है मैं तुम्हारा सिर दबाना चाहता हुँ

अगर खुदकुशी कर लिए तो दुनिया कुछ नही कहेगी
यह भी सच है की मैं ज़हर खाना चाहता हूँ

उजाड़ा है जिन्होंने घर मेरा किसी जमाने में
जिन्होने घर उजाड़ा उन्ही का घर बसाना चाहता हुँ

जख्म पर जख्म मुझको दीं है दुनिया
यह भी सच है उन्हें मरहम लगाना चाहता हुँ

मेरे नज़रों में तेरे वक्त की कीमत है बुहत
तुम्हारे वक्त को मैं नही गवाना चाहता हुँ

आप हम से जब दुर रह कर खुश हो सुनो
आपकी परेशानी को जड़ से मिटाना चाहता हुँ

यहां पर सात फेरो और वादों का कुछ पता ही नही
तुम्हारे गाँव का बस एक और चक्कर लगाना चाहता हुँ

जो मेरा सिर काट कर खुश हो काट लो अब
उसी के सामने मै अपना सिर झुकाना चाहता हुँ

आंनद विशेष शर्मा, नई दिल्ली

मंत्री टीकाराम जूली बोले- बीजेपी का चेहरा दलित विरोधीःगजेन्द्र सिंह-अर्जुनराम जालोर नहीं गए,कमेटी की रिपोर्ट दबाई, हमारे 4 कैबिनेट मिनिस्टर दलित

जयपुर। प्रदेश के सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्री टीकाराम जूली ने कहा- बीजेपी का दलित विरोधी चेहरा है। राजस्थान और देश में बीजेपी ने दलितों के मुद्दे पर एक माहौल पैदा किया है। लेकिन केन्द्रीय मंत्री ?गजेन्द्र सिंह शेखावत जालोर के पड़ोस में ही जोधपुर में रहते हैं। वो भी जालोर नहीं गए, ना ही केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री होने के बावजूद राजस्थान में ERCP ला पा रहे हैं। केन्द्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल भी आज तक जालोर नहीं गए। जबकि वह दलित समाज से आते हैं। मंत्री जूली ने कहा जालोर की घटना के बाद मैं 15 अगस्त को सबसे पहले वहां पहुंचा और परिवार से भी मिला। उनकी बात को भी सुना। विभाग की ओर से रिलीफ भी सबसे पहले उनके अकाउंट में डलवाई। जूली ने कहा-गहलोत सरकार में 4 कैबिनेट मिनिस्टर दलित हैं,जिसे बीजेपी पचा नहीं पा रही है। टीकाराम जूली ने कहा राजस्थान में जहां-जहां घटनाएं हुईं। बीजेपी ने लगभग सब जगह जांच कमेटियां बनाई हैं। लेकिन जालोर में बच्चे की मौत के केस में कमेटी क्यों नहीं बनाई ? यहां उनका चेहरा दिखता है। जालोर में ही एक संत ने आत्महत्या कर ली। उसमें बीजेपी विधायक का नाम आया है। उसमें बीजेपी ने कमेटी भी बना ली। उसकी रिपोर्ट आज तक नहीं बताई है। वहां बीजेपी के एमएलए जोगेश्वर गर्ग का बयान राजनीति से प्रेरित है, वो खुलकर कुछ नहीं बोल रहे हैं। क्योंकि सारी चीजें सरकारी जांच के सामने आ गए। इसलिए BJP और RSS दोनों चुप हैं। उन्होंने कहा पूर्व में राजस्थान में डांगावास कांड में 5 दलितों की निर्मम हत्या हुई। उस समय भी बीजेपी का कोई नेता वहां नहीं गया। ना ही सरकार से अलग कोई मदद की। लेकिन आज बीजेपी नेता हमसे डिमांड कर रहे हैं। बीजेपी के राज के समय डेल्टा मेघवाल हत्याकांड में भी सरकार की ओर से कभी कोई मदद नहीं की गई।

4 कैबिनेट मिनिस्टर दलित,जिसे बीजेपी नहीं पचा पा रही

मंत्री टीकाराम ने कहा- कांग्रेस सरकार ने आजादी के बाद पहली बार 4-4 कैबिनेट मिनिस्टर दलित वर्ग से बनाए हैं, ये बीजेपी नहीं पचा पा रही। सरकार के मंत्रियों को बीजेपी किसी न किसी बहाने से घेरने का काम करती है। बीजेपी ने दलित समाज से 1-2 से ज्यादा मंत्री नहीं बनाए। आजादी के 75 साल बाद पहली बार दलित समाज से मुख्य सचिव कांग्रेस सरकार ने बनाया। जबकि बीजेपी सरकार के वक्त दलित द्रुस उमराव सालोदिया को मुख्य सचिव नहीं बनाया। उन्हें धर्म परिवर्तन तक करना पड़ा। उन्होंने लैटर भी लिखा था। पिछली कांग्रेस सरकार ने अम्बेडकर विद्यापीठ यूनिवर्सिटी की घोषणा की, बीजेपी सरकार आने पर उसने निरस्त किया, हमने फिर से शुरू किया है।

सीवरेज लाइन और टूटी हुई सड़कों की वजह से नांगल जैसा बोरा के लोग हो रहे परेशान प्रशासन आंखें बंद किए बैठा

मरूधर विशेष/महावीर सिंह चौहान

जयपुर के नांगल जैसा बोहरा पर रोड व सीवरेज लाइन ने इस कदर बवाल मचा रखा है कि लोगों में आने जाने में भी डर लगता है जब हमारी टीम वहां पहुंची तो हालात बहुत बद से बदतर थे वहां के लोगों ने हमें बताया वार्ड 14 और 19 के पार्षद सुरेश गरणा व बाबू लाल शर्मा को हमने कई बार इस बाबत फोन कॉल भी किए हैं और व्हाट्सएप भी किए हैं हर बार वह हमें सांत्वना दे देते है। आज भी हम लोग इस बारिश के मौसम में परेशान हो रहे हैं। गंदगी का आलम ये है, हमारे घरों तक जा रही है अभी डेंगू मलेरिया के बारिश के मौसम में पनपने की वजह से यहां पानी बराबर भरा रहता है जिस वजह से मक्खी मच्छरों का प्रकोप बढ़ता जा रहा है इससे कहीं डेंगू मलेरिया या और भी कई बीमारियां फैल सकती है। लेकिन प्रशासन इस बात को लेकर के नहीं चिंतित अब ये लोग चाहते है। हम इनको ओर प्रशाशन को दिखाये यहां के लोगों की व्यथा। हमारे पार्षद महोदय और हमारे विधायक साहब इनके दर्द देखे और यहां के जो हालात हैं उन पर भी गौर फरमाएं नहीं तो आने वाले समय के अंदर यदि इसी तरीके से गंदगी फैलती रही और इन लोगों का यहां पर आना जाना दूसवार रहा तो हो सकता है। कोई हादसा हो सकता है कोई बीमारी फैल जाए इससे पहले हमारी आप से विनती है पार्षद महोदय की आप इनकी व्यथा को सुनें स्वयं जाकर ओर और इस परेशानी का हल निकाले।

अधिवक्ता समुदाय ने कलेक्टर जयपुर में किया वृक्षारोपण कार्यक्रम

मरूधर विशेष/महावीर सिंह चौहान

दी डिस्टिक एडवोकेट बार जयपुर के महासचिव गजराज सिंह राजावत ने बताया कि आज डिस्ट्रिक्ट एडवोकेट बार एसोसिएशन जयपुर द्वारा कलेक्ट्रेट परिसर जयपुर में हर वर्ष की तरह वृक्षारोपण का प्रोग्राम किया गया इस अवसर पर सभी सम्मानित अधिवक्ताओं ने अपनी अपनी सीट के आगे पेड़ लगाकर वृक्षारोपण कार्यक्रम को संपन्न कराया इस अवसर पर सभी अधिवक्ता गणों ने संकल्प लिया कि इन पेड़ों को लगातार पानी और खाद देकर बड़ा करेंगे पर प्रकृति को हरा-भरा बनाएंगे।

नांगल लाखा मामले में पूर्व सरपंच सहित 11 गिरफ्तार

मरुधर हिन्द/रमाकान्त शर्मा बानसूर उपखंड के गांव नांगल लाखा में 5 मार्च 2022 को हाइकोर्ट के आदेश पर अतिक्रमण हटाने गई राजस्व टीम और पुलिस प्रशासन की टीम पर जानलेवा हमला करने के मामले को लेकर पुलिस ने मुख्य आरोपी पूर्व सरपंच हरदान सिंह और उनके पुत्र सतेन्द्र सहित 11लोगों को गिरफ्तार किया है। बानसूर डीएसपी मृत्युंजय मिश्रा ने बताया कि 5 मार्च को हाईकोर्ट के आदेश पर नांगल लाखा में अतिक्रमण हटाने गई राजस्व टीम पर ग्रामीणों ने जानलेवा हमला कर दिया था। जिसको लेकर हरसोरा पुलिस थाने में मामला दर्ज करवाया गया था। पुलिस ने हमला करने वाले 6 लोगों को पहले गिरफ्तार किया था। वहीं आज मुख्य आरोपी पूर्व सरपंच हरदान सिंह गुर्जर और उनके बेटे सत्येंद्र गुर्जर जो वर्तमान सरपंच कमलेश देवी के पति सहित 11 लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। वहीं उन्होंने बताया कि नांगल लाखा वर्तमान सरपंच कमलेश देवी फरार है। बाकी लोगों की गिरफ्तारी जल्द ही कर ली जाएगी। पुलिस ने आज नांगल लाखा के पूर्व सरपंच हरदान गुर्जर, उनके पुत्र और सरपंच पति सत्येंद्र गुर्जर, सुंदर, दिनेश, गोपी, मुकेश, ख्याली और चौडानीया के अनिल, सुभाष , सतिया सहित बाबरिया के रामनिवास को गिरफ्तार किया है। वहीं डीएसपी ने बताया कि अभी तक 17 लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है। बाकी 6 से 8 लोगों की गिरफ्तारी बाकी है। वहीं एडवोकेट विजय और जगराम को न्यायालय की ओर से अंतरिम राहत दी हुई है।

जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा के नेतृत्व में कांग्रेस प्रतिनिधिमण्डल रामबास जाकर चिरंजीलाल सैनी के परिजनों से मिला

मरूधर विशेष

कठूमर। दिनेश लेखी। गोविन्दगढ़ थाना क्षेत्र के रामबास गांव में चिरंजीलाल सैनी की हत्या मामले में जिला कांग्रेस कमेटी ,अलवर जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा के नेतृत्व में कांग्रेस प्रतिनिधिमण्डल रामबास जाकर परिजनों से मिला।

जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा ने बताया की कांग्रेसजनो ने मृतक चिरंजी लाल सैनी के पुत्र योगेश, परिवारजनों एवं ग्रामीणों के साथ एक जाजम पर बैठ कर घटना की विस्तृत जानकारी ली।

पुत्र योगेश ने घटनाक्रम एवं पुलिस प्रशासन की कार्यशैली के बारे में बताया।

परिजनों एवं ग्रामीणों ने जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा से मॉबलीचिंग की धाराओं में मामला दर्ज करने, 1 करोड़ का मुआवजा, सरकारी नौकरी, जल्द सभी आरोपियों की गिरफ्तारी, फास्टट्रैक में मुकदमा चलाने, विरोध प्रदर्शन में शामिल ग्रामीणों के खिलाफ दर्ज मुकदमा हटाने की मांग रखी।

कांग्रेस अध्यक्ष योगेश मिश्रा ने कहा की यह एक दुखद घटना है, इस पर राजनीति नहीं करनी चाहिए। उन्होंने परिजनों एवं ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि पीड़ित के साथ न्याय होगा एवं दोषियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाएगी। इस घटना में शामिल कोई भी दोषी बचेगा नहीं एवं कोई निर्दोष फसेगा नहीं। इस घटनाक्रम की विस्तृत रिपोर्ट आज ही पूर्व केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, कैबिनेट मंत्री टीकाराम जूली एवं मेवात विकास बोर्ड के चेयरमैन जुबेर खान जी को को दे दी जाएगी एवं पीड़ित परिवार को जल्दी से जल्दी मदद के प्रयास किये जाएंगे।

कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल ने पीड़ित के घर जाकर परिवार वालों को सांत्वना दी।प्रतिनिधिमंडल में जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा, अजीत सिंह यादव, रोहिताश चौधरी, संजीव बारेठ, पुष्पेन्द्र धाबाई, रिपुदमन गुप्ता, रामस्नेही शर्मा, महेश सैनी, लालाराम सैनी, प्रीतम मेंदीरत्ता, जे डी आर्यन आदि शामिल थे।